ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

अगस्त–२०१६

अगस्त–२०१६ ◆ वर्ष ५ ◆ अंक ०३ ◆ उदयपुर

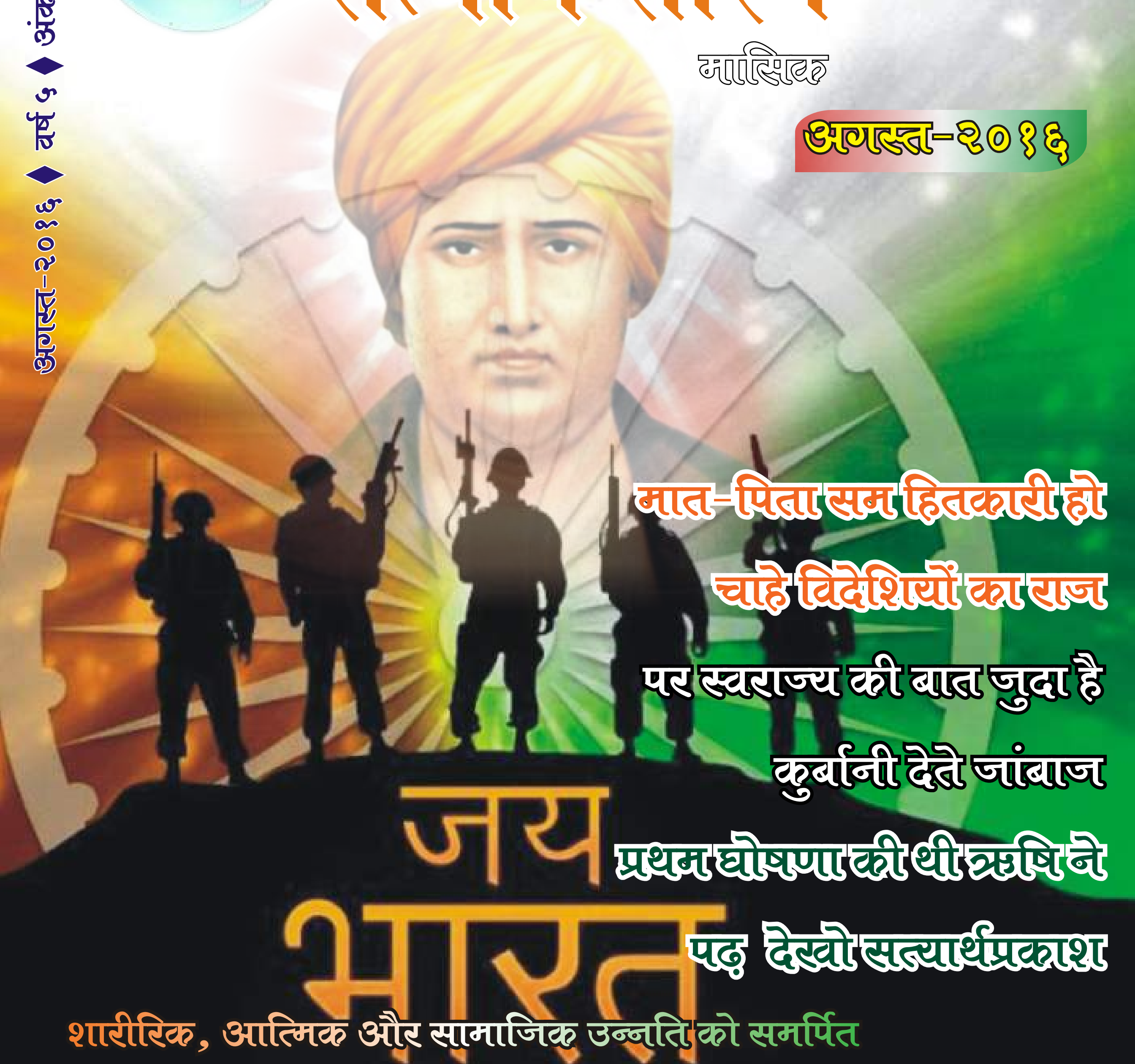

मात–पिता सम हितकारी हो
चाहे विदेशियों का राज
पर स्वराज्य की बात जुदा है
कुर्बानी देते जांबाज
प्रथम घोषणा की थी ऋषि ने
पढ़ देखो सत्यार्थप्रकाश

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹ १० ५६

भारत
के व्यंजनों का आधार,
है, एम.डी.एच. मसालों से प्यार।
MDH
मसाले
असली मसाले
सच - सच
Sambhar masala
Garam masala
DEGGI MIRCH
Chunky Chat masala
Chana masala
Kitchen King
Pav Bhaji masala
Peacock Kasoori Methi
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
ESTD. 1919
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली – 110015 Website : www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆ भारत	विदेश
संरक्षक - ११००० रु.	$ 1000
आजीवन - १००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय - ४०० रु.	$ 100
वार्षिक - १०० रु.	$ 25
एक प्रति - १० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें।
अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया
मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११७
श्रावण शुक्ल पंचमी
विक्रम संवत्
२०७३
दयानन्दाब्द
१९२

August - 2016

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन
३५०० रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

समाचार ३०

०४	जीवेम शरदः शतम्
०५	वेद सुधा
१०	संस्कृति विमर्श
१७	आर्य सम्पादक सम्मेलन
२१	स्वतंत्रता आन्दोलन और महिलाएँ
२५	स्थितप्रज्ञस्य का भाषा
२७	६ अगस्त का ऐतिहासिक दिन
२८	सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ६/१६
२९	सत्यार्थ पीयूष- वेदों में लोकतंत्र

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ५ अंक - ०३

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.)
११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६९४, ०९३१४५३५३७९, ०९८२९०६३११०
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

।।ओ३म्।।
जीवेम शरदः शतम्
DIMOND JUBILEE
Dimonds are for ever, they shine in every situation, Place & Time. We wish the same for a wonderful person like you.
दुनिया में तो असंख्य लोग आते हैं, जाते हैं
कुछ ही समय की रेत पर , अपना नाम लिख पाते हैं
समष्टि हित में जो त्याग की मिसाल बन जाते हैं
वही जन-जन के अभिनन्दनीय बन जाते हैं
'अनुव्रतः पितुः पुत्रो' को चरितार्थ जो करते हैं
वही नव-पीढ़ी के प्रेरक बन जाते हैं
महान् पिता की 'वंशी' के स्वर आप बने
छेड़ी जो तान मधुर , सबके प्रिय आप बने
विश्वभर में गुँजाने को ऋषि के मंतव्यों को
आर्य-नौका के खेवनहार आप बने
खोले दिल के दरवाजे सब, सहारा तिनके के आप बने
आर्य मंतव्यों के विस्तारण हेतु
अनेक प्रकल्पों के प्रस्तोता आप बने
हीरक जयन्ती मना रहे हम सब
मुदित मन नाच रहे झूमकर हम सब
७५ पार किये हैं अभी तक तो केवल
'शतात्' के लक्ष्य को पाना ही पाना है
प्रभु दयालु के चरणों मे होके नत मस्तक
प्रार्थना कर रहे मिलकर के हम सब
कर्म-योगी आप हैं, ऋषि-अनन्य भक्त आप हैं
प्रभु कृपा करें अनुव्रती हों आपके हम सब
Happy 75th birthday!
On this day, we wish you more healthy days ahead of you, so that you have more chances of spreading your wisdom and experience to others as you have done with us.
Ashok Arya & all trustees

ओ३म्

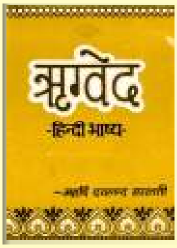

वेद सुधा

मृत्यु समय में क्या करें

वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तꣳशरीरम्।
ओ३म् क्रतो स्मर। क्लिबे स्मर। कृतꣳस्मर।।

- यजुर्वेद ४०/१५

मनमोहन कुमार आर्य

ऋषि दयानन्द भक्त-स्वामी अच्युतानन्द सरस्वती कृत इस मन्त्र के पदों का अर्थ-

मन्त्र का पदार्थः- हे (क्रतो) कर्म कर्त्ता जीव ! शरीर छूटते समय तू (ओ३म्) इस मुख्य नाम वाले परमेश्वर का (स्मर) स्मरण कर। (क्लिबे) सामर्थ्य के लिये परमात्मा का (स्मर) स्मरण कर। (कृतम्) अपने किये का (स्मर) स्मरण कर। (वायुः) यह प्राण अपानादि वायु (अनिलम्) कारण रूप वायु जो (अमृतम्) अविनाशी सूत्रात्मारूप है उस को प्राप्त हो जायगा। (अथ) इस के अनुसार (इदम् शरीरम्) यह स्थूल शरीर (भस्मान्तम्) अन्त में भस्मीभूत हो जायगा।

मन्त्र का भावार्थ- शरीर को त्यागते समय पुरुषों को चाहिये कि, परमात्मा के अनेक नामों में सब से श्रेष्ठ जो परमात्मा का प्यारा ओ३म् नाम है, उसका वाणी से जाप और मन से उस के अर्थ सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर का चिन्तन करें। यदि आप, अपने जीवन में उस सबसे श्रेष्ठ परमात्मा के ओ३म् नाम का जाप और मन से उस परम प्यारे प्रभु का ध्यान करते रहोगे तो, आपको मरण समय में भी उसका जाप और ध्यान बन सकेगा। इसलिए हम सब को चाहिये कि ओ३म् का जाप और उसके अर्थ परमात्मा का सदा चिन्तन किया करें, तब ही हमारा कल्याण हो सकता है, अन्यथा नहीं।

इस मन्त्र में स्वयं परमात्मा ने मनुष्यों को शिक्षा दी है कि जब उनकी मृत्यु का समय आये तो वे क्या करें? यह प्रश्न महत्वपूर्ण है और इसका उत्तर भी उतना ही महत्वपूर्ण है। यदि यह ईश्वरीय शिक्षा उपलब्ध न होती तो हमारे विद्वानों व ऋषि मुनियों को इस विषय में कई प्रकार के विधान करने पड़ते। महर्षि दयानन्द ने स्वयं भी इस ईश्वरीय शिक्षा का पालन किया था और उनका अनुकरण करते हुए उनके अनेक शिष्यों ने भी इसका पालन किया। इस मन्त्र में कहा गया है कि मृत्यु को प्राप्त होने वाला जीवात्मा अपनी मृत्यु के समय परमात्मा के सबसे श्रेष्ठ नाम "ओ३म्" का वाणी और मन से जाप व ध्यान करे। ऐसा तभी सम्भव है कि जब हम अपनी मृत्यु से पूर्व के जीवन में भी ओ३म् नाम के जाप का अभ्यास करेंगे। यदि अभ्यास नहीं होगा तो यह सम्भव है कि हम मृत्यु के भय, परिवार, इष्ट-मित्र व अपनी धन सम्पत्ति के छूटने के मोह व दुःख आदि के कारण इसे भूल जायें और संसार से जाते समय इस अन्तिम वेदोक्त धर्म वा कर्तव्य का पालन न कर सकें। इस शिक्षा के महत्व के कारण यह आवश्यक है कि प्रत्येक मनुष्य को अपने जीवन में ईश्वर के मुख्य नाम ओ३म् नाम का जप करने के अभ्यास के साथ उसका मन के द्वारा ध्यान भी करना चाहिये। हम अनुभव करते हैं कि यह बात देखने में साधारण है परन्तु इसका महत्व गहन-गम्भीर व महान् है।

संसार में हम देखते हैं कि यदि किसी माता-पिता का बिगड़ा हुआ पुत्र उनके पास आकर अपनी गलतियों को स्वीकार कर ले, उनका प्रायश्चित करे और भविष्य में उनकी आज्ञा के अनुसार अच्छे आचरण का वचन दे तो माता-पिता उस पर द्रवित हो जाते हैं और उसे अवसर देने के लिए तत्पर हो जाते हैं। यदि हमने जीवन में ईश्वरीय ज्ञान वेद की शिक्षाओं व आज्ञाओं का पालन किसी कारण नहीं किया और ज्ञान होने पर अन्तिम समय व उससे पूर्व करना आरम्भ करते हैं तो इसका कुछ न कुछ प्रभाव व लाभ हमें अवश्य प्राप्त हो सकता है। ईश्वर की आज्ञा का पालन करने से सबको निश्चय ही सुख मिलता है और न करने से जन्म-जन्मान्तर में दुःख मिलना अवश्यम्भावी है। अतः हमें जब भी अवसर मिले अथवा जब भी ज्ञान हो, हमें वैदिक शिक्षाओं के अनुसार अपने जीवन का सुधार कर लेना चाहिये, यही हमारे लिए हितकारी है। इति।

- चुक्कूवाला-२
देहरादून- २४८००१
चलभाष- ०९४१२९८५१२१

एक और तथाकथित धर्मगुरु, एक बड़ी हिंसा की कार्यवाही जो तथाकथित संत रामपाल की भाँति पुलिस बल के विरुद्ध थी अर्थात् राज्य के विरुद्ध थी। फिर वही तथाकथित संत आसाराम की भाँति सैकड़ों एकड़ जमीन पर कब्जा, करोड़ों रुपयों का खजाना। आखिर अध्यात्म से शुरू हुई ये तथाकथित यात्राएँ जुर्म की दलदल में परिणित कैसे हो जाती हैं? सबसे बड़ी बात रोज-रोज तथाकथित बाबाओं की पोल खुलते देख भी लाखों करोड़ों की भीड़ इनके पास कैसे इकट्ठी हो जाती है? उससे भी बढ़कर पाखण्ड के उजागर होने पर भी पाखंडियों के लिये जान तक संकट में डाल देने का जुनून कहाँ से पैदा हो जाता है?

वास्तव में कहानी किसी आसाराम, रामपाल, राधे माँ से शुरू नहीं होती वरन् उस मानसिकता से पैदा होती है जिसे गुरुडमवाद कहते हैं। यह प्रारम्भ होता है **‘गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूँ पाँव, बलिहारी गुरु आपने गोविन्द दियो बताय’** से अथवा **‘गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वर, गुरु साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः’** जैसी ‘स्वार्थ सिद्धि-प्रयोजन’ के निमित्त बनायी उक्तियों से। यहाँ कोई तर्क काम नहीं करता, बुद्धि को कोने में खड़ा कर दिया जाता है। यद्यपि भारतीय परम्परा में गुरु के अवदान को अत्यधिक महत्त्व दिया गया है परन्तु वही गुरु शिष्य की विदाई के अवसर पर स्पष्ट आज्ञा देता है कि हमारे सदाचरण मात्र ही अनुकरणीय हैं दुराचरण नहीं। परन्तु तथाकथित बाबे चेलों का ब्रेनवाश कर इसके विपरीत उपदेश देते हैं- **‘बाबा वाक्य प्रमाणं’** उनका ध्येय वाक्य है। ये वो मानसिकता है जिसके कारण जब हर प्रकार से गुरु के दुष्कर्म उद्घाटित हो गए हैं, उसका डॉन-अवतार भी सामने आ चुका है, आतंक का ऐसा नंगा नाच खेला जा रहा है कि एक शिकायतकर्त्ता महिला अपने परिवार सहित गायब हो गयी है, फिर भी अंधभक्त, जब गुरु की अदालत में पेशी होनी होती है तब पुलिस से इतनी सहायता माँगकर ही परम संतुष्ट हो जाते हैं कि वह जगह बतादें जहाँ से गुरुजी के दर्शन भर हो जायँ, झलक मात्र मिल जाय। जहाँ से गुरु पैदल निकल जायँ वहाँ लोट-पोट होते रहते हैं।

“यान्यस्माकꣳ सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि नो इतराणि।।”

यू ट्यूब पर एक वीडियो है। जिसमें एक अभिनेत्री ने एक तथाकथित देवी माँ और उसके अंध-शिष्यों की जो दास्ताँ वर्णित की है उसे सुनकर आप स्तब्ध रह जायेंगे। पर यह मानसिकता नयी नहीं है। यह वही मानसिकता है जो शराब के नशे में स्वयं की बेटियों से संतान उत्पत्ति की गर्हित बात को भी श्रद्धा-भाव से देख, उसे महापुरुष/पैगम्बर ही मानती है। यह वही मानसिकता है जो विषय-भोग में आकण्ठ लिप्त को भी, १२ विवाहिताओं के अतिरिक्त भी अनेकों से सम्बन्ध रखने वाले को भी, निर्विषयी, अपना रहनुमा और भगवान् मानती है। यह वही मानसिकता है जो १६ वीं सदी के एक धार्मिक सम्प्रदाय के गुरुओं को अपनी नवविवाहिता के समर्पण से धन्य हो जाने की अनुभूति में थी।

महर्षि दयानन्द ने अपनी आँखों से ऐसा बहुत कुछ देखा था इसी कारण गुरुडमवाद का प्रबल विरोध किया था और आर्य समाजियों को भी चेताया था कि वे गुरुडम को पास भी न फटकने दें। जब बम्बई में आर्यसमाज की स्थापना हुयी तो स्वामीजी महाराज ने केवल साधारण सदस्यता स्वीकार की। धार्मिक संगठन आर्य समाज में निर्वाचन की प्रजातांत्रिक पद्धति का सूत्रपात किया।

उक्त दर्शायी मानसिकता के दर्शन स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने युवाकाल में एक अबला के सतीत्व हरण का प्रयास करने

वाले बाबे के तथा चर्च में एक पादरी द्वारा नन को कुमार्ग पर घसीटने की चेष्टाओं के पश्चात् भी पादरी के प्रतिष्ठित रहने में देखा।

वस्तुतः सच बात यह है कि राजनीति की तरह विभिन्न मत-मतान्तर भी आज शक्ति तथा सत्ता संचय के प्रभावशाली साधन बन गये हैं, अतः आश्चर्य की बात नही है कि जो वैराग्य से कोसों दूर हैं वे धर्मगुरु बनकर अपनी दुष्कामनाओं की पूर्ति का जरिया ढूढ़ लेते हैं और विशेष बात यह है कि धर्म और आस्था की जब बात आती है तो सामान्य तौर पर सरकारें और कभी-कभी तो कोर्ट भी मूक दर्शक बनकर रह जाती है। इस प्रकार धर्म की आड़ में इन नकली गुरुओं की चवन्नी चलती रहती है।

पाठकों को पंजाब के नूरमहल के आशुतोष महाराज ध्यान होंगे। उनके शिष्यों का दावा है कि महाराज साक्षात् ईश्वर-दर्शन कराते हैं। १८ जनवरी २०१४ को इन्हीं महाराज को श्वांस की तकलीफ हुयी और डाक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। महाराज के अचानक गुजर जाने से उनकी तथाकथित १००० करोड़ रुपये की संपत्ति के उत्तराधिकार के प्रश्न ने मामला ऐसा उलझाया कि आज तक महाराज का अंतिम संस्कार नहीं हुआ। उनके दिव्य ज्योति संस्थान के प्रबंधन ने घोषित किया हुआ है कि महाराज मरे नहीं, समाधि में हैं। उनकी एक शिष्या कहती है कि समाधि में जाने से पूर्व महाराज ने स्वयं स्वप्न में उन्हें समाधि में जाने की बात बतायी थी। प्रबंधन ने इसी कारण महाराज के शरीर को विशेष फ्रीजर में सुरक्षित रखा है और उनका विश्वास है कि महाराज लौट आयेंगे, परन्तु अब २ वर्ष से अधिक समय व्यतीत हो जाने पर विश्वास की नीवें भी हिल रहीं हैं। इसी बीच दिलीप झा नाम के एक व्यक्ति ने अपने को महाराज का पुत्र बताकर अंतिम संस्कार हेतु प्रार्थना-पत्र पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय में लगाया था जिसे अप्रमाणित मान न्यायालय ने अस्वीकार कर दिया। महाराज के एक ड्राइवर हैं पूरनसिंह, जिन्होंने महाराज की तथाकथित हरकतों को देख मोहभंग हो जाने के कारण नौकरी छोड़ दी। उन्होंने महाराज की हत्या का संदेह प्रकट किया और न्यायालय में 'हेबियस कार्पस' की रिट दायर की, जो स्वीकार नहीं हो पायी। जो भी हो धर्म तथा आस्था के नाम पर सरकारें अपने कर्तव्य से किस प्रकार विमुख रह जातीं हैं आशुतोष महाराज से सम्बंधित विवाद उसका उदाहरण है। पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय के आदेश पर कि पंजाब सरकार १५ दिन के अन्दर महाराज के शरीर का अंतिम संस्कार करे पंजाब सरकार ने उत्तर दिया कि यह आस्था से जुड़ा मामला है अतः सरकार को भय है कि ऐसा करने पर अनुयायियों के द्वारा कानून व्यवस्था बिगाड़ दी जावेगी। एक खंडपीठ ने पुनः एकल पीठ के आदेश को स्टे कर दिया। अब पाठक समझ सकेंगे कि तथाकथित धर्मगुरु किस प्रकार सत्ता, धन व हथियारों का संग्रह कर पाते हैं तथा समय पड़ने पर करोंथा अथवा मथुरा जैसी हिंसा सम्भव हो पाती है।

"गुरु तो माता, पिता, आचार्य्य और अतिथि होते हैं, उनकी सेवा करनी, उनसे विद्या, शिक्षा लेनी-देनी शिष्य और गुरु का काम है। परन्तु जो गुरु लोभी, क्रोधी, मोही और कामी हो तो उसको सर्वथा छोड़ देना।"

सोचने वाली बात ये है कि अध्यात्म, वैराग्य, अपरिग्रह की शिक्षा देने वाले इन धर्मगुरुओं के पास अथाह संपत्ति कहाँ से आती है और यह भी कि इनकी उसमें लालसा क्यों रहती है? मथुरा में ४००० करोड़ की अकूत संपत्ति तथा सहस्रों हेक्टेयर भूमि के स्वामी जय गुरुदेव की संपत्ति कहाँ से आयी? प्रायः ऐसी ही संपत्तियों के कारण मतवादी पंथों में संपत्ति को लेकर झगड़े होते हैं, यहाँ तक कि कत्ल तक कर दिए जाते हैं, तथाकथित धार्मिक पंथ को खूनी पंथ बदलने में देर नहीं लगती। जय-गुरुदेव के निधन के पश्चात् भी उत्तराधिकार का संघर्ष हुआ। रामवृक्ष के अलावा तिवारी तथा पंकज यादव उम्मीदवार थे। अंततोगत्वा विजय पंकज यादव की हुयी। ध्यातव्य है कि यह पंकज यादव जय गुरुदेव उर्फ तुलसीदास का ड्राइवर था अर्थात् अध्यात्म के क्षेत्र में भी साधना तथा वैराग्य गद्दी प्राप्त करने की योग्यता न होकर, गुरु से निकटता व अंतरंगता ही निर्णायक होती हैं।

एक और मजे की बात है कि संपत्ति के सन्दर्भ में बात एक झोंपड़ी से प्रारम्भ होती है तथा धीरे-धीरे महलों तक पहुँच जाती है। तुलसीदास अर्थात् बाबा जय गुरुदेव के गुरु ने उनको ब्रज क्षेत्र में एक झोंपड़ी बनाने की बात कही थी। बाबा ने झोंपड़ी बनायी भी एक, परन्तु धीरे-धीरे सारा परिदृश्य बदल गया। कहते हैं कि उनकी असली कीमत १२००० करोड़ रुपये है। संपत्तियों पर जबरन कब्जे के कारण अनेक शिकायतें जय गुरुदेव के खिलाफ स्थानीय किसानों ने की हुई हैं।

मथुरा हिंसा के मास्टर माइण्ड रामवृक्ष के अनुयायियों के पास भारी असला कहाँ से आया। जो घटा, वैसा हो सकता है, ऐसी आशंकाओं को क्यों नजरअंदाज किया गया। वही आस्था के क्षेत्र में हस्तक्षेप न करने की सरकारी मानसिकता। नतीजा एक युवा एस.पी. तथा एक एस.एच.ओ. की हत्या सहित कुल २६ व्यक्तियों की मौत। कानून आखिर कानून है, चाहे इसे कोई धर्मगुरु तोड़े चाहे सामान्य व्यक्ति वह दंडनीय है। समय रहते इसका निग्रह कर दिया जावे तो बहुत से अपराध जो धर्म की आड़ में पल्लवित होते रहते हैं उनका निरोध हो जाय।

जवाहर बाग, मथुरा में केवल २ दिन रुकने की स्वीकृति रामवृक्ष ने माँगी थी। कुछ लोगों से संख्या सहस्रों तक और दो दिन से अवधि बढ़कर दो वर्ष क्योंकर हुयी? जो व्यक्ति दो दिन की बात करता हो वहाँ जवाहर बाग पूरी रिहायशी कॉलोनी और वह भी रामवृक्ष की बादशाहत से संयुक्त कैसे हुआ? जवाहर बाग के नजारे अकल्पनीय हैं। जवाहर बाग में क्या नहीं था। राशन

की दूकान थी, आटा चक्की थी, सब्जी मंडी थी और तो और फैशन पार्लर थे स्कूटर व लक्जरी गाड़िया थीं। बिजली का उपभोग तो होता ही था पर बिजली का बिल न चुकाने पर जब बिजली कनेक्शन काट दिया गया तो अपना स्वयं का सोलर सिस्टम लगाकर बिजली आपूर्ति कर ली गयी।

चारों ओर से बंदूक धारियों से घिरे चलने वाले रामवृक्ष का आतंक कम नहीं था। उद्यान विभाग के ट्यूब वेल पर इन्होंने कब्जा कर लिया था। २८० एकड़ का जवाहर बाग रामवृक्ष यादव की रियासत बन गया था। उसने अपना झंडा भी बना लिया था। ३५ रुपये किलो की चीनी २५ रुपये किलो में तथा ६० रुपये किलो के अंगूर २० रुपये किलो में ही बिकते थे इस रियासत में। गुरु ने बनायी थी दूरदर्शी पार्टी जिसने विफलता की नयी कहानी लिखी थी, तो चेला क्यों पीछे रहे। रामवृक्ष यादव की पार्टी का नाम है 'आजाद भारत विधिक वैचारिक क्रान्ति सत्याग्रही'। खुद को नेताजी सुभाष का अनुयायी बताने वाले रामवृक्ष की माँग थी कि सोना १२ रुपये किलो तथा डीजल एक रुपये का ६० लीटर होना चाहिए। करेंसी आजाद हिन्द फौज की चलनी चाहिए। राम वृक्ष की माँग यह भी थी कि देश में राष्ट्रपति तथा प्रधान मंत्री के चुनाव रद्द होने चाहिए।

मथुरा में हुए हिंसा के नग्न तांडव ने फिर से यह प्रश्न उठा दिया है कि धर्म की आड़ में यदि गैरकानूनी काम होते हैं तो उनको छूट की क्या तथा कितनी सीमा होनी चाहिए? इस काण्ड में २६ व्यक्तियों की मौत हो गयी। एक एस.पी. तथा एस.एच.ओ. को अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ा।

आज की राजनीति की यह दिशा हो गयी है कि यदि आपके पास भीड़ है जो समय आने पर वोटों में परिवर्तित हो सकती है तो फिर राजनेता आपके सात खून भी माफ कर सकते हैं। जब तक अपरिहार्य न हो जाय तब तक वे आपके काले कारनामों को नजरअंदाज करते रहेंगे। इसी कारण जब वे अत्यन्त देर से 'एक्शन' में आते हैं तो तब तक पानी सर से ऊपर निकल जाने के कारण मथुरा जैसे काण्ड घटित हो जाते हैं। यही स्थिति हमें बाबा आसाराम, आशुतोष महाराज, राधे माँ आदि के सन्दर्भ में दिखायी देती है। ऐसे मामलों में अधिकतर कार्यवाही कोर्ट के आदेश पर ही क्यों होती है? मथुरा मामले के साथ ही तथाकथित संत रामपाल, आशुतोष महाराज सभी के मामलों में कोर्ट की दखल साफ दिखायी देती है, जो सरकारों की मानसिकता प्रदर्शित करती है जिसकी जितनी आलोचना की जाय कम है।

अपराधी किसी भी स्थिति, वेश में क्यों न हो कानून को निष्पक्षता से तथा बिना भय के साथ अपना काम करते रहना चाहिए यह अपेक्षा तो शासन से है परन्तु असली काम आम जन को करना पड़ेगा और वह है गुरुडमवाद को समूल नष्ट करना। यह सरकारों का काम नही हमारा और आपका काम है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का निम्न अवतरण अवश्य मननीय है। गुरुडमवाद में आकण्ठ डूबे व्यक्ति का कथन है-

'गुरु के पग धोके पीना, जैसी आज्ञा करे वैसा करना, गुरु लोभी हो तो वामन के समान, क्रोधी हो तो नृसिंह के सदृश, मोही हो तो राम के तुल्य और कामी हो तो कृष्ण के समान गुरु को जानना, चाहै गुरुजी कैसा ही पाप करे तो भी अश्रद्धा न करनी, सन्त वा गुरु के दर्शन को जाने में पग-पग में अश्वमेध का फल होता है, यह बात ठीक है वा नहीं?' महर्षि उत्तर देते हैं-

(उत्तर) ठीक नहीं। ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर और परब्रह्म परमेश्वर के नाम हैं, उसके तुल्य गुरु कभी नहीं हो सकता। यह गुरु माहात्म्य गुरु गीता भी एक बड़ी पोपलीला है। गुरु तो माता, पिता, आचार्य्य और अतिथि होते हैं, उनकी सेवा करनी, उनसे विद्या, शिक्षा लेनी-देनी शिष्य और गुरु का काम है। परन्तु जो गुरु लोभी, क्रोधी, मोही और कामी हो तो उसको सर्वथा छोड़ देना, शिक्षा करनी। सहज शिक्षा से न माने तो अर्घ्य-पाद्य अर्थात् ताड़ना, दंड, प्राणहरण तक भी करने में कुछ दोष नहीं। जो विद्यादि सद्‌गुणों में गुरुत्व नहीं है, झूठ-मूंठ कंठी, तिलक, वेदविरुद्ध, मन्त्रोपदेश करने वाले हैं, वे गुरु ही नहीं किन्तु गड़रिये जैसे हैं। जैसे गड़रिये अपनी भेड़ बकरियों से दूध आदि से प्रयोजन सिद्ध करते हैं, वैसे ही शिष्यों के, चेले चेलियों के, धन हरके अपना प्रयोजन करते हैं। ...... यह सब काम स्वार्थी लोगों का है। जो परमार्थी लोग हैं, वे आप दुःख पावें, तो भी जगत् का उपकार करना नहीं छोड़ते। अच्छा हो कि राष्ट्र के सभी सदस्य 'गुरु' के सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द की इस सीख को हृदयंगम कर लें। अन्यथा तथाकथित धर्म-स्थल अपराध के अड्डे बने रहेंगे।

- अशोक आर्य

चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०९००१३३९८३६

नवलखा महल में नवनिर्मित ''आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा'' एवं सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ के बारे में दर्शकों के विचार

नवलखा महल वर्तमान व आगे आने वाली पीढ़ियों के लिए एक ज्ञान स्थल है जो प्राणीमात्र (मनुष्य) को सत्य की राह दिखाता है। मैं इस स्थल पर आकर धन्य हो गया। हर वो व्यक्ति जो अपनी मातृभूमि एवं अपनी संस्कृति से प्यार करता है उसे एक बार अवश्य इस पवित्र स्थल के दर्शन करने चाहिए।

- पुनीत दीक्षित, गाजियाबाद

स्वामी जी का जीवन-दर्शन आज की भटकी मानवता एवं हिन्दू पथिक के लिए रहनुमा है। बड़ा प्रेरणादायी है यह चित्रदर्शन।

- स्वामी राजीव रंजन तीर्थ, नागौर

यह स्थल प्राचीन वैदिक साहित्य का अभूतपूर्व खजाना है। यह ऋषि मुनियों की गाथाओं और जीवनी का व्यवस्थित संगम है। इस पवित्र भूमि को मैं बारम्बार नमन करता हूँ।

- पंकज पटेल, उदयपुर

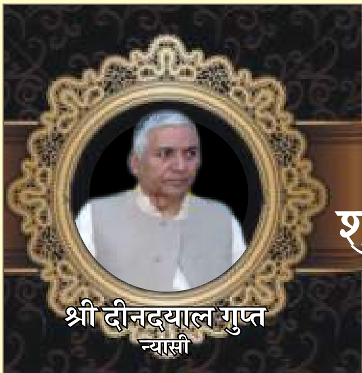

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
एक लाख रु.	दस हजार	७५०००	७५००
५००००	५०००	२५०००	२५००
१००००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य	भंवरलाल गर्ग	डॉ.अमृत लाल तापड़िया
मंत्री-न्यास	कार्यालय मंत्री	उपमंत्री-न्यास

संस्कृति विमर्श

– देवनारायण भारद्वाज

संस्कृति के प्राणाधार हैं संस्कार। संस्कार वह क्रियाकलाप है जिसके द्वारा किसी वस्तु, भाषा, व्यक्ति को संस्कृत किया जाता है। संस्कारों के इसी सार समुच्चय को संस्कृति कहते हैं। जिस प्रकार किसी अज्ञात पदार्थ के आविष्कार से उसे संसार के सामने प्रकाश में लाया जाता है, जिस प्रकार किसी अशुद्ध वस्तु का परिष्कार करके उसे परिष्कृत किया जाता है, उसी प्रकार संस्कृति पर्यावरण चेतना, पवित्रता व आत्मोत्कर्ष को प्रोत्साहित करती है। संस्कृति हमारे सामाजिक व्यवहार, हमारी भाषा व साहित्य को परिमार्जित करती है। यही नहीं संस्कृति हमारी सूक्ष्म वृत्तियों को विकसित करती है। पाशविकता को मानवीयता की ओर और मानवीयता को देवत्व की ओर अग्रसर करती है। संस्कृति सदैव आदर्श दिशा की ओर इंगित करती है। इसमें शुभ सकारात्मक ध्वनि ही गुंजरित होती है अशुभ व नकारात्मक ध्वनि का कोई स्थान नहीं है। संस्कृति का शब्द विन्यास-संकृति-सम्यक् कृति की फलश्रुति प्रदान करता है। आविष्कार, परिष्कार एवं संस्कार के सुगम त्रैत को उदाहरण से स्पष्ट करते हैं। कोई जौहरी बहुमूल्य मणिरत्नों की खोज में भूमि की खुदाई कराता है। दीर्घकाल की खुदाई के बाद भूमि की गहराई में छुपे हुए कुछ रत्न प्रस्तर मिलते हैं। यह हुआ उनका आविष्कार। वह उन प्रस्तर कणों की

कटाई छिलाई एवं घिसाई करता है तो उनके ऊपर के मल विक्षेप की छँटाई हो जाती है। इस परिष्कार क्रिया से परिष्कृत होकर वे प्रस्तर कण श्वेत-शुभ प्रकाशमान हीरे के रूप में चमकने दमकने लगते हैं। इनका मूल्य लाखों गुणा अधिक हो जाता है।

सामान्यतया आविष्कार एवं परिष्कार की क्रियायें प्रकृति के जड़ पदार्थ तक ही सीमित रहती हैं। वैज्ञानिक क्षेत्र में भी इनका प्रभाव जगत् को चमत्कृत करता रहता है। जब हम चेतन प्राणिजगत् पर दृष्टिपात करते हैं तो वहाँ पर आविष्कार, परिष्कार से कहीं अधिक संस्कार का प्रभाव क्षेत्र दृष्टिगत होता है। संसार के असंख्य जीव जन्तुओं की

योनियों को तीन श्रेणियों में परिगणित किया जा सकता है। एक वे अधोमुखी हैं जिनके सिर भूमि में गड़े रहते हैं, दूसरे वे सममुखी हैं जिनके सिर भूमि के समानान्तर होते हैं, तीसरे वे ऊर्ध्वमुखी हैं जिनके सिर आकाश की ओर उठे रहते हैं। प्रथम में समस्त वृक्ष, वनस्पति, द्वितीय में समस्त कीट-पतंग-पशु-पक्षी और तृतीय में समस्त मानव प्राणि आते हैं। प्रथम व द्वितीय कोटि के प्राणी अपने जन्मजात स्वाभाविक ज्ञान के अनुसार अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत कर लेते हैं। उनके आहार, आराम, आरक्षा-प्रजनन की क्रियायें स्वाभाविक रूप से चलती रहती हैं। ऊर्ध्वमुखी मनुष्य को स्वाभाविक के साथ-साथ ईश्वर ने नैमित्तिक ज्ञान का वरदान भी दिया है, जिसकी अपेक्षा से वह रंक से राजा बन सकता है और जिसकी उपेक्षा से वही राजा रंक हो जाता है।

इसीलिए महर्षि मनु ने कहा है- **'जन्मना जायते शूद्रः संस्कारात् द्विज उच्यते'** अर्थात् सभी मनुष्य शूद्र के रूप में जन्मते हैं किन्तु संस्कारों के द्वारा ही वे द्विज बनते हैं। शूद्र व द्विज शब्दों को किसी जाति विशेष से जोड़ना महर्षि मनु का अभिप्राय नहीं है। शूद्र वही है जो जिस शरीर के साथ जन्म लेता है उसी के श्रम स्वेद बिन्दुओं से द्रवित होकर

दूसरों की सहायता करता है। स्वल्प भुगतान पर जीवन यापन कर लेता है। द्विज वह है जो एक बार माता-पिता से जन्म लेता है और दूसरी बार संस्कारों के गर्भ में जन्म लेकर सुसंस्कृति के प्रांगण में फलता-फूलता व बीज बिखेरता है

'यतोऽभ्युदय निःश्रेयस सिद्धिः स धर्मः' – वैशे. दर्शन १/४

अर्थात् जिससे लौकिक सुख व पारलौकिक आनन्द की सिद्धि होती है वह धर्म है। धर्म बेतार का वह तार है जिसमें संस्कृति रूपी विद्युत प्रवाहित रहती है। धर्म शरीर-आवरण के रूप में समष्टि को धारण करता है तथा संस्कृति आत्मा स्वरूप उसमें संचरण करती है। जैसे साधारण सोने को अग्नि में तपाकर कुन्दन बनाया जाता है वैसे ही शिशुओं को संस्कार की भट्टी के व्रत ताप से उनके दुर्गुणों को दूर कर तथा सद्गुणों को पूर कर संस्कृति का शृंगार बना दिया जाता है।

"जैसे साधारण सोने को अग्नि में तपाकर कुन्दन बनाया जाता है वैसे ही शिशुओं को संस्कार की भट्टी के व्रत ताप से उनके दुर्गुणों को दूर कर तथा सद्गुणों को पूर कर संस्कृति का शृंगार बना दिया जाता है।"

बात सोलह या न्यूनाधिक संस्कारों की ही नहीं, इनको करके समुदाय के लोग अपनी संतान को श्रेष्ठ बनाने का उपक्रम करते हैं। वास्तव में यह निरन्तर चलते रहने वाली प्रक्रिया है। मनुष्य ज्ञानेन्द्रियों द्वारा हर क्षण देखता, सुनता, सूँघता, खाता, स्पर्श करता रहता है, वैसा वह सोचने लगता है। जैसा वह सोचता है वैसे ही उसके विचार बनते हैं। जैसे उसके विचार होते हैं वैसे ही उसके संस्कार बनते हैं जैसे उसके संस्कार होते हैं वैसा ही उसका व्यवहार होता है, जैसा उसका व्यवहार होता है वैसा ही उसका चरित्र बनता है। मानवीय चरित्र में ही उसकी संस्कृति की झलक दिखाई देती है।

मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्। – ऋग्. १०/५३/६

के अनुसार मननशील मनुष्य दिव्य मनुष्यों को जन्म देते व निर्माण करते हुए संस्कृत करते चले जाते हैं तो यही देश क्षेत्र विशेष की सामूहिक संस्कृति कहलाने लगती है।

मानवरूपी संचरणशील मुद्रा के दो पार्श्व हैं एक ओर संस्कृति, दूसरी ओर चरित्र है। मुद्रा का अग्र या पृष्ठ कोई

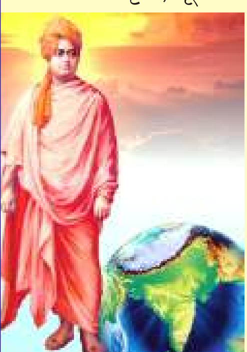

भी भाग असामान्य होने पर वह प्रचलन से बाहर हो जाती है। दोनों पार्श्व सम्यक् न होने पर मानव की भी यही स्थिति हो जाती है, वह समाज के लिए अवांछनीय हो जाता है। स्वामी विवेकानन्द भारत की महान् संस्कृति का संदेश लेकर अमेरिका गए थे। उनकी अलमस्त वेशभूषा एवं व्यवहार को देखकर वहाँ के निवासी उनको कोई विचित्र प्राणी समझकर हास्य विनोद में मग्न हो जाते थे। ऐसे ही एक अवसर पर उन्होंने नागरिकों को सदा-सदा के लिए सचेत कर दिया था। In your country it is tailor who makes a man cultured and civilized but I belong to that country where a man's character and moral spiritual values make him cultured and civilized. अर्थात् आपके देश में दर्जी परिधान पहनाकर सभ्य बनाता है किन्तु भारत जहाँ का मैं निवासी हूँ वहाँ मनुष्य को चरित्र, नैतिकता एवं उसके आध्यात्मिक मूल्य उसे सभ्य व संस्कृत बनाते हैं।

कई बार सभ्यता एवं संस्कृति को एक समझ लिया जाता है। जैसे कोई फल ऊपर से रंग रूप एवं आकार में बहुत आकर्षित करता है किन्तु चखते ही मुँह कडुआ हो जाता है और फेंक दिया जाता है, ऐसे ही शरीर का रूपाकर्षण सभ्यता समझनी चाहिए और फल के अन्दर व्याप्त सुगन्धित, मधुर पोषक रस को संस्कृति रूपी अन्तःशक्ति समझनी चाहिए। इसके लिए जन्मकाल से ही अभिभावक को ही सतर्क रहना पड़ता है। इस ध्येय से शिक्षा की अपरिहार्य आवश्यकता है। शिक्षा से साधारण तात्पर्य सीखना-सिखाना, सीख देना और आवश्यक होने पर दंड देना है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने शिक्षा की जो परिभाषा दी है वह सभी मानवीय पक्षों का आच्छादन करती है- 'जिससे विद्या, सभ्यता, धर्मात्मता, जितेन्द्रियतादि की बढ़ती हो और अविद्यादि दोष छूटें वह शिक्षा है।'

सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ में उन्होंने लिखा भी है-

माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठितः।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये वको यथा॥

शरीर से दुर्बल व्यक्ति भी अपनी विद्याजनित संस्कृति द्वारा शीर्ष पद का अधिकारी बन जाता है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र

मोदी ने विकलांग को दिव्यांग की संज्ञा देकर अपनी सहृदयता का परिचय दिया है। कभी इसके लिए राजा जनक

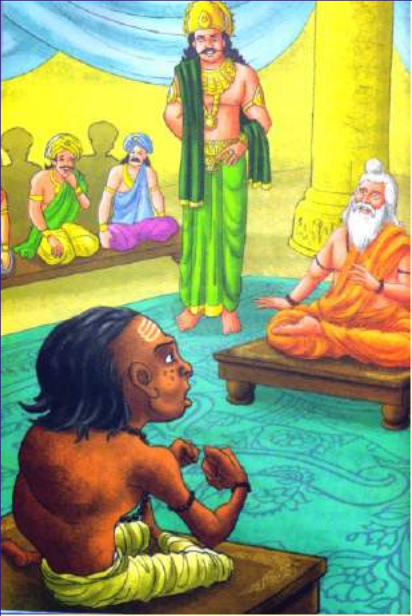

को भी बाध्य होना पड़ा था। उनकी बृहद् सभा में एक बालक अष्टावक्र ने अभी द्वार में प्रवेश ही किया था, कि सभी सभासद उनको देखकर खिलखिलाते हुए हँसने लगे। कारण यह था, कि वह बालक अपने शरीर के आठ अंगों से टेढ़ा था। जब सभा की सामूहिक हँसी थम गई तब अष्टावक्र ने अट्टाहस करते हुए अपनी हँसी गुंजायमान कर दी। बाद में राजा जनक ने नम्रतापूर्वक अष्टावक्र को सम्बोधित करते हुए उनसे पूछ लिया अष्टावक्र! सभा तो तुम्हारे इस वक्रातिवक्र शरीर को देखकर हँस पड़ी, पर तुम क्यों हँसे? बताइये? अष्टावक्र ने उत्तर दिया राजन! आप विदेह कहलाते हैं और मैं यहाँ विद्वानों की सभा समझ कर आया था पर यहाँ तो सभी चर्मकार दिखाई दिए जिन्होंने मेरे शरीर को देखा मेरी अन्तरात्मा के सौन्दर्य ज्ञान को नहीं आँका। राजा जनक ने बालक अष्टावक्र का क्षमापूर्वक स्वागत किया और उनसे ज्ञानोपदेश ग्रहण किया। आध्यात्मिक संस्कृति साहित्य में अष्टावक्र गीता का प्रमुख स्थान है।

साक्षर लोग सुशिक्षित होकर एक से एक उपयोगी चमत्कार करते देखे जाते हैं पर वे तब अशिक्षित ही रह जाते हैं जब वे अपने ज्ञान का दुरूपयोग अन्याय, अपमिश्रण एवं अत्याचार के लिए करते हैं। इसके विपरीत निरक्षर लोग प्रशिक्षित होकर अपनी सहज सुलभ बुद्धि से उत्तम रचनात्मक कार्य कर लेते हैं। लोकप्रिय ग्रन्थ पंचतंत्र में एक आख्यान आता है। चार भाई थे। तीन भाई पढ़े-लिखे विशेषज्ञ थे, चौथा भाई अनपढ़ किन्तु बुद्धिमान था। इसलिए वे छोटे भाई से लगाव नहीं रखते थे। जब वे धनोपार्जन के लिए गाँव से किसी नगर में जाने लगे तो भी कठिनाई से साथ ले जाने को तैयार हुए। मार्ग में एक जंगल पड़ा। वहाँ कुछ अस्थियों को पड़ी देखकर ढांचा विशेषज्ञ भाई ने अस्थियों को क्रमानुसार व्यवस्थित करके पशु विशेष का अस्थिजाल खड़ा कर दिया; दूसरे रसायनज्ञ भाई ने उस पर मांस-त्वचा का आवरण चढ़ा दिया। तीसरे भाई प्राणवायु विशेषज्ञ को छोटे भाई ने बहुत रोका, सावधान किया। बोला- 'इस जानवर को पहचानने के बाद भी आप जीवित करना चाहते हैं। विद्या का अभिमान आप लोगों को खा जायेगा।' छोटे भाई ने पेड़ पर चढ़कर अपने जीवन को बचा लिया। जबकि प्राण प्रतिष्ठा होते ही कालान्तर से क्षुधित शेर ने तीनों विशेषज्ञ भाईयों को अपना आहार बना लिया।

संस्कृति आन्तरिक आध्यात्मिक एवं त्याग का प्रतीक है। जबकि सभ्यता बाह्य, भौतिक एवं भोग पर आधारित है। महाविघातक ए.के.राइफल की खोज करने वाले माइकेल कलष्किनिकोव को तब बड़ी निराशा हुई जब आतंकवादियों द्वारा उसका दुरुपयोग होने लगा। उन्होंने कहा था कि यदि मैं किसानों के उपयोग का अच्छा यंत्र आविष्कृत करता तो मुझे अधिक सन्तुष्टि होती। (वेदवाणी नवम्बर २०११) सम्पूर्ण कथ्य का चार बिन्दुओं में सार समाहार करके लेखनी को विश्राम देना उचित समझता हूँ।

न जियो न जीने दो - विष्कृति है।
जियो किन्तु जीने न दो- विकृति है।
जियो और जीने दो- प्रकृति है।
न जियो किन्तु जीने दो- संस्कृति है।

- वरेण्यम, अवन्तिका प्रथम,
रामघाट मार्ग, अलीगढ़ (उ. प्र.)

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री आर.डी. गुप्त, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष,श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द)

सभ्यता और संस्कृति की अविरलधारा है गंगा

कृष्ण कुमार यादव

गंगा सिर्फ एक नदी का नाम नहीं है, बल्कि यह जीवनदायी है। गंगा की लहरों ने न जाने कितनी सभ्यताओं व संस्कृतियों को बनते बिगड़ते देखा। वैदिक काल से लेकर आधुनिक युग तक के उत्थान-पतन की गवाह है गंगा। राजनीति, अर्थनीति, सामाजिक व्यवस्था से लेकर धर्म, अध्यात्म, पर्यटन, पर्यावरण तक सब इससे प्रभावित होते रहे हैं। एक ही गंगा के न जाने कितने रूप हैं, हर कोई उसे अपने-अपने नजरिए से विश्लेषित करता है। इसके तट पर विकसित धार्मिक स्थल और तीर्थ भारतीय सामाजिक व्यवस्था के विशेष अंग हैं। इसके ऊपर बने पुल, बाँध और नदी परियोजनाएँ भारत की बिजली, पानी और कृषि से संबंधित जरूरतों को पूरा करती हैं। राष्ट्रीय नदी गंगा भारत की सबसे लंबी नदी है जो पर्वतों, घाटियों और मैदानों में २,५१० किलोमीटर की दूरी तय करती है। वैज्ञानिक मानते हैं कि इस नदी के जल में बैक्टीरियोफेज नामक विषाणु होते हैं, जो जीवाणुओं व अन्य हानिकारक सूक्ष्मजीवों को जीवित नहीं रहने देते हैं। तभी तो इसे माँ कहा गया है। इसकी गोद में न जाने कितनों का विकास हुआ, प्रभाव बढ़ा और आज भी गंगा तट के बाशिंदों को गर्व है कि वे माँ गंगा के सानिध्य में फलते-फूलते हैं।

गंगा नदी हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा है। यह करोड़ों लोगों के लिए जीवन रेखा और आस्था का प्रतीक है। गंगा नदी के अवतरण को लेकर अनेक पौराणिक कथाएँ जुड़ी हुई हैं। पुराणों के अनुसार स्वर्ग में गंगा को मन्दाकिनी और पाताल में भागीरथी कहते हैं। इसी प्रकार महाभारत में राजा शान्तनु और गंगा के विवाह तथा उनके सात पुत्रों के जन्म की कहानी है।

गंगा के अवतरण का सच जो भी हो, पर यह एक तथ्य है कि यह भारत और बांग्लादेश में मिलाकर २५१० कि.मी. की दूरी तय करती हुई उत्तरांचल में हिमालय से लेकर बंगाल की खाड़ी के सुंदरवन तक विशाल भू-भाग को सींचती है। गंगा अपनी सहायक नदियों के साथ देश के बड़े भू-भाग के लिए सिंचाई का बारहमासी स्रोत है। इन क्षेत्रों में प्रमुख रूप से धान, गेहूँ, गन्ना, दलहन, तिलहन और आलू की पैदावार होती है। नदी की वजह से मछली उद्योग भी काफी फल-फूल रहा है। देश की प्राकृतिक संपदा ही नहीं, जन-जन की भावनात्मक आस्था का आधार भी गंगा है। २५१० किमी तक भारत तथा उसके बाद बांग्लादेश में अपनी लंबी यात्रा करते हुए यह सहायक नदियों के साथ दस लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल के अति विशाल उपजाऊ मैदान की रचना करती है।

गंगा पर्यटकों को भी आकर्षित करती है। गंगा नदी ५ राज्यों उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड और पश्चिम बंगाल से होकर गुजरती है। इसके किनारे बसे प्रमुख शहर हैं- हरिद्वार, कन्नौज, कानपुर, इलाहाबाद, वाराणसी, पटना, फरख्खा इत्यादि।

गंगा तट पर बसे २६ शहरों की जनसंख्या १ लाख से अधिक है तो २३ शहरों की जनसंख्या १ लाख से ५० हजार के बीच है। ४८ शहरों की जनसंख्या ५० हजार से कम है। उत्तर प्रदेश की बात करें तो यहाँ गंगा करीब एक हजार किलोमीटर का सफर तय करती है। यह दुनिया की ऐसी अकेली नदी है जिसके किनारे सबसे ज्यादा मिलियन सिटी (१० लाख या उससे ज्यादा आबादी वाले शहर) हैं। गंगा बेसिन में करीब ४ करोड़ की आबादी बसती है। ऐसे में सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण गंगा का यह मैदान अपनी घनी जनसंख्या के कारण भी जाना जाता है। १०० फीट (३१ मी.) की

अधिकतम गहराई वाली यह नदी भारत में पवित्र मानी जाती है तथा इसकी उपासना माँ और देवी के रूप में की जाती है। गंगा नदी में मछलियों तथा सर्पों की अनेक प्रजातियाँ तो पाई ही जाती हैं मीठे पानी वाले दुर्लभ डॉल्फिन भी पाए जाते हैं। यह कृषि, पर्यटन, साहसिक खेलों तथा उद्योगों के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देती है तथा अपने तट पर बसे शहरों की जलापूर्ति भी करती है। गंगा की इस असीमित शुद्धीकरण क्षमता और सामाजिक श्रद्धा के बावजूद इसका प्रदूषण रोका नहीं जा सका है। फिर भी इसके प्रयत्न जारी हैं और सफाई की अनेक परियोजनाओं के क्रम में नवंबर २००८ में भारत सरकार द्वारा इसे भारत की राष्ट्रीय नदी तथा इलाहाबाद और हल्दिया के बीच (१६०० किलोमीटर) गंगा नदी जलमार्ग को राष्ट्रीय जलमार्ग घोषित किया है।

"वस्तुतः गंगा के पराभव का अर्थ होगा, हमारी समूची सभ्यता का अंत।"

यही कारण है कि यह हिन्दी साहित्य की मानवीय चेतना को भी प्रवाहित करती है। महाभारत, रामायण एवं अनेक पुराणों में गंगा को पुण्य सलिला, पाप-नाशिनी, मोक्ष प्रदायिनी, सरित्श्रेष्ठा एवं महानदी कहा गया है। संस्कृत कवि जगन्नाथ राय ने गंगा की स्तुति में श्रीगंगालहरी नामक काव्य की रचना की है। हिन्दी के आदि महाकाव्य पृथ्वीराज रासो, तथा वीसलदेव रास (नरपति नाल्ह) में गंगा का उल्लेख है। आदिकाल का सर्वाधिक लोक विश्रुत ग्रंथ जगनिक रचित आल्हखण्ड में गंगा, यमुना और सरस्वती का उल्लेख है। शृंगारी कवि विद्यापति, कबीर वाणी और जायसी के पद्मावत में भी गंगा का उल्लेख है। अन्य कवियों में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, सुमित्रानन्दन पन्त और श्रीधर पाठक आदि ने भी यत्र-तत्र गंगा का वर्णन किया है। छायावादी कवियों का प्रकृति वर्णन हिन्दी साहित्य में उल्लेखनीय है। सुमित्रानन्दन पन्त ने 'नौका विहार' में ग्रीष्मकालीन तापस बाला गंगा का जो चित्र उकेरा है, वह अति रमणीय है। उन्होंने गंगा नामक कविता भी लिखी है। गंगा नदी के कई प्रतीकात्मक अर्थों का वर्णन जवाहर लाल नेहरू ने अपनी पुस्तक भारत एक खोज (डिस्कवरी ऑफ इण्डिया) में किया है। भारतीय पुराण और साहित्य में अपने सौन्दर्य और महत्व के कारण बार-बार आदर के साथ वंदित गंगा नदी के प्रति विदेशी साहित्य में भी प्रशंसा और भावुकतापूर्ण वर्णन किए गए हैं।

गंगा भारत की संस्कृति, धर्म और पर्यावरण का सबसे बड़ा प्रतीक भी है। हिन्दू गंगा में स्नान करने और गंगा जल के आचमन को मोक्ष से जोड़ते हैं। गंगाजल का इस्तेमाल हिन्दुओं के बहुत सारे पवित्र कार्यों में किया जाता है। कई शोधों से यह बात साबित हो चुकी है कि गंगा के जल में बीमारी पैदा करने वाले जीवाणुओं को मारने की क्षमता होती है। गंगाजल में यह शक्ति गंगोत्री और हिमालय से आती है। जब गंगा हिमालय से नीचे उतरती है तो इसमें कई तरह की मिट्टी, कई तरह के खनिज, कई तरह की जड़ी बूटियाँ मिल जाती हैं। लम्बे समय से प्रचलित इसकी शुद्धीकरण की मान्यता का वैज्ञानिक आधार भी है। वैज्ञानिक मानते हैं कि इस नदी के जल में बैक्टीरियोफेज नामक विषाणु होते हैं, जो जीवाणुओं व अन्य हानिकारक सूक्ष्मजीवों को जीवित नहीं रहने देते हैं। नदी के जल में प्राणवायु (ऑक्सीजन) की मात्रा को बनाए रखने की असाधारण क्षमता है। किन्तु इसका कारण अभी तक अज्ञात है। इसके कारण हैजा और पेचिश जैसी बीमारियाँ होने का खतरा बहुत ही कम हो जाता है, जिससे महामारियाँ होने की संभावना बड़े स्तर पर टल जाती है।

लेकिन गंगा के तट पर घने बसे औद्योगिक नगरों के नालों की गंदगी सीधे गंगा नदी में मिलने से गंगा का प्रदूषण पिछले कई सालों से भारत सरकार और जनता की चिन्ता का विषय बना हुआ है। औद्योगिक कचरे के साथ-साथ प्लास्टिक कचरे की बहुतायत ने गंगा जल को भी बेहद प्रदूषित किया है। वैज्ञानिक जाँच के अनुसार गंगा का बायोलाजिकल ऑक्सीजन स्तर ३ डिग्री (सामान्य) से

बढ़कर ६ डिग्री हो चुका है। गंगा में २ करोड़ ९० लाख लीटर प्रदूषित कचरा प्रतिदिन गिर रहा है। विश्व बैंक रिपोर्ट के अनुसार उत्तर-प्रदेश की १२ प्रतिशत बीमारियों की वजह प्रदूषित गंगा जल है। यह घोर चिन्तनीय है कि गंगा-जल न स्नान के योग्य रहा, न पीने के योग्य रहा और न ही सिंचाई के योग्य। इसके अलावा घटता जल प्रवाह, घटती जल संग्रहण क्षमता और पानी का घटता स्तर आज चिंता का विषय बने हुए हैं। हरिद्वार के बाद जो गंगा आप देखते हैं उसमें मूल गंगा जल नहीं रह जाता। हरिद्वार के पास भीमगौड़ा से और उसके बाद नरौरा में गंगा का जल निकाल लिया जाता है। उसके आगे जो गंगा रह जाती है उसमें उसकी सहायक नदियों, नालों का पानी और भूजल ही रह जाता है। अलकनंदा और भागीरथी नामक जो दो नदियाँ देवप्रयाग आकर जीवनदायिनी गंगा बनती हैं, उसी देवनदी की हत्या केवल डेढ़ सौ किलोमीटर आगे हरिद्वार में मानव कर देता है।

गंगा की पवित्रता और अच्छाइयाँ ही उसकी दुश्मन बन गई हैं। गंगा के बेसिन में बसे ४० करोड़ से अधिक लोगों के जीवन पर उसका असर पड़ता है।

इसके अलावा यह मीठे पानी डॉल्फिन सहित १४० से ज्यादा

मछलियों का घर भी है। १० करोड़ से अधिक लोग पीने और सिंचाई के पानी के लिए पूरी तरह से गंगा और इसकी सहायक नदियों पर निर्भर हैं। लोगों की नासमझी और गैर जिम्मेदाराना रवैये की वजह से जीवनदायिनी कुछ क्षेत्रों में 'जीवन लेने' वाली बन गई है। नदी में लगातार बढ़ते प्रदूषण की वजह से कुछ स्थानों पर तो इसका जल आचमन करने लायक भी नही बचा है। धार्मिक अनुष्ठानों के अपशिष्ट, औद्योगिक कचरे और शहरों से निकलने वाले सैकड़ों नालों से निकलने वाली गंदगी ने दुनिया की सबसे पवित्र नदी की यह हालत की है। एक अनुमान के मुताबिक हर रोज गंगा में २ अरब लीटर गंदगी प्रवाहित कर दी जाती है। गंगा के किनारे बसे छोटे-बड़े करीब १०० शहरों के नालों का पानी बिना ट्रीटमेंट के गंगा में डाल दिया जाता है। ८० फीसदी कचरा गंगा नदी का सीधे नगर निगमों की नालियों के जरिये आता है, जबकि इस नदी में फेंके गए कुल कचरे का करीब १५ फीसदी औद्योगिक स्रोतों से आता है। १२ से १३ अरब लीटर जल-मल हर दिन गंगा में डाला जाता है, इसके किनारे बसे २९ से अधिक शहरों, ७० कस्बों और हजारों गाँवों का। ८० फीसदी स्वास्थ्य समस्याएँ

और करीब एक तिहाई मौतें भारत में जलजनित बीमारियों के कारण होती हैं। हैजा, टाइफाइड, हैपेटाइटिस, पीलिया और अमीबीय पेचिश जैसी बीमारियों में प्रदूषित पानी की अहम भूमिका रहती है। इस वजह से देश की इस सबसे बड़ी नदी का पानी पीना तो दूर स्नान करने लायक भी नहीं बचा है।

वस्तुतः गंगा के पराभव का अर्थ होगा, हमारी समूची सभ्यता का अंत। गंगा में बढ़ते प्रदूषण पर नियंत्रण पाने के लिए घड़ियालों की मदद ली जा रही है। शहरों की गंदगी को साफ करने के लिए संयंत्रों को लगाया जा रहा है और उद्योगों के कचरों को इसमें गिरने से रोकने के लिए कानून बने हैं। यूपीए सरकार ने गंगा को २००९ में राष्ट्रीय नदी तो घोषित कर दिया, पर गंगा अविरल रहने पर ही निर्मल होगी। गंगा एक्शन प्लान व राष्ट्रीय नदी संरक्षण योजना भी लागू की गई हैं। हालांकि इसकी सफलता पर प्रश्नचिह्न भी लगाए जाते रहे हैं। जनता भी इस विषय में जागृत हुई है। इसके साथ ही धार्मिक भावनाएँ आहत न हों इसके भी प्रयत्न किए जा रहे हैं। इतना सब कुछ होने के बावजूद गंगा के अस्तित्व पर संकट के बादल छाए हुए हैं। २००७ की एक संयुक्त राष्ट्र रिपोर्ट के अनुसार हिमालय पर स्थित गंगा की जलापूर्ति करने वाले हिमनद की २०३० तक समाप्त होने की संभावना है। इसके बाद नदी का बहाव मानसून पर

आश्रित होकर मौसमी ही रह जाएगा।

संप्रग सरकार ने गंगा, यमुना, गोदावरी सहित विभिन्न नदियों के संरक्षण पर दस साल में २६०७ करोड़ रुपये खर्च किए। बावजूद इसके इन नदियों में आज भी प्रदूषण का स्तर चिन्ताजनक है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गंगा सहित अन्य कई नदियों की सफाई को अपनी सरकार की प्राथमिकताओं में रखा है। इसके तहत अलग मंत्रालय का गठन भी किया गया है। मंत्रालय ने गंगा को अविरल और निर्मल बनाने के लिए सचिवों की समिति बनाकर इसका खाका तैयार करना शुरु कर दिया है। हालांकि पिछली सरकार भी गंगा सहित देश की अन्य नदियों की सफाई पर काम करती रही है।

गंगा को लेकर तमाम कवायदें चल रही हैं, पर यह बेहद जरूरी है कि गंगा सफाई अभियान पर हो रहे खर्च की मॉनीटिरिंग हो और जबावदेही तय हो। मॉनीटिरिंग समिति में तकनीकी विशेषज्ञ रखे जाएँ तो बेहतर होगा। आज सिर्फ प्रदूषण नियंत्रण पर फोकस करने के बजाय गंगा की समस्या को समग्र रूप में देखे जाने की जरूरत है। गंगा की अविरल धारा में आई रुकावट भी इसकी मौजूदा स्थिति के लिए उत्तरदायी है। इस नदी पर बने बिजली उत्पादन केंद्र और बाँध इसकी धारा को रोकते हैं। इसका सीधा-सीधा असर नदी के जलीय जीवन पर पड़ता है। गंगा में बड़े बाँधों के निर्माण पर रोक लगाने के साथ-साथ पावर प्लांट के लिए छोटे बाँध मुख्य स्रोत के बगल में बनाये जाएँ। भूजल-स्तर संरक्षण की व्यवस्था, वर्षा-जल संरक्षण का कड़ाई से पालन एवं वैकल्पिक बिजली उत्पादन को अपनाकर भी गंगा व अन्य नदियों का प्रवाह बढ़ाया जा सकता है।

गंगा मात्र एक नदी नहीं, माँ है। यह हमारी संस्कृति और सभ्यता की अविरलधारा है, जो अनन्तकाल से यहाँ के चिन्तन और चेतना को उर्वरा शक्ति से भरती रही। बीच के काल खण्ड में उसके साथ हुई छेड़छाड़ के कारण ही माँ गंगा का वह दिव्य प्रवाह अवरुद्ध हुआ। यदि कठिन परिश्रम और सही रणनीति के साथ गंगा को साफ करने का प्रयत्न किया जाए तो यह कार्य असंभव भी नहीं है। इस कार्य के लिए एक दीर्घकालिक रणनीति बनाने की जरूरत है। जन-सहभागिता को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। इसके लिए व्यापक जागरूकता अभियान चलाने की जरूरत है। इस महान् कार्य को भ्रष्टाचार से मुक्त करना भी एक कठिन चुनौती होगी, क्योंकि कई बार देखने में आया है कि ऐसे कार्य भ्रष्टाचार के शिकार होने के कारण बीच में ही बंद हो जाते हैं। यदि दीर्घकालिक रणनीति पर सही ढंग से कार्यान्वयन किया गया तो वह दिन दूर नहीं जब गंगा फिर से अपने गौरव को प्राप्त करेगी और करोड़ों लोगों के लिए वास्तव में मोक्षदायिनी बन जाएगी।

- निदेशक डाक सेवाएँ,
टाइप-५ निदेशक बंगला, पोस्टल ऑफीसर्स कॉलोनी
निकट जेडीए सर्किल, जोधपुर (राजस्थान)- ३४२००१

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार

₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- १२ शुद्ध हल प्रेषित करने वालों में से एक चयनित विजेता को 'सत्यार्थ-भूषण' की उपाधि, प्रमाण-पत्र तथा ₹५१०० नकद प्रदान किए जावेंगे।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।

नवीन नियम

- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

।।ओ३म्।।
स्मृतिशेष पूज्य स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती
की पुण्य स्मृति में आयोजित
आर्य सम्पादक सम्मेलन
दिनाङ्क २३ व २४ जुलाई २०१६
सम्पादक श्रेष्ठ
....
“..........”
को
सादर सप्रेम भेंट
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राज.) ३१३००१

प्रथम आर्य सम्पादक सम्मेलन

ओ३म्

नवलखा महल उदयपुर

आर्य सम्पादकगण

एक अखिल विश्व आर्य सम्पादक परिषद् का गठन अत्यावश्यक है।

प्रतिवर्ष एक आर्य सम्पादक सम्मेलन अवश्य हो।

१८७८ से आज तक आर्य सम्पादकों का कोई सम्मेलन हुआ हो, यह ज्ञात नहीं होता। अतएव यह विश्व का प्रथम आर्य सम्पादक सम्मेलन है।

अगले वर्ष होने वाले सम्पादक सम्मेलन का संयोजक श्री अशोक आर्य- सम्पादक सत्यार्थ-सौरभ को मनोनीत किया गया।

आगामी वर्ष में आर्य सम्पादक सम्मेलन दिल्ली में रखें तो वे समस्त व्यवस्था हेतु तैयार- डा. अनिल आर्य व स्वामी आर्यवेश जी का प्रस्ताव।

पत्रकारिता के इतिहास का अनुकरण करते हुए दयानन्दीय मंतव्यों को पाठक वर्ग को ध्यान में रखते हुए इस प्रकार प्रस्तुत करें कि स्वाध्याय में उनकी रुचि जागृत हो। -विनय आर्य, आर्य सन्देश

१८७८ से अब तक का यह प्रथम आर्य सम्पादक सम्मलेन है, अतः ऐतिहासिक है। आर्य जगत् के समाचार पत्र, समाचार पत्र नहीं, विचार पत्र हैं, व्यक्तित्व निर्माण के साधन हैं, एक सम्पादक को यह भूमिका अवश्य ध्यान रखनी चाहिए। -डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री, वैदिक पथ

आर्य पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से परिवारों को सुसंस्कृत बनाने के महती कार्य का सम्पादन किया जाय। वैदिक शोध पर सतत कार्य किया जाकर पत्रिकाओं के माध्यम से प्रकाशित किया जाए। -दुर्गादास वैदिक, दयानन्द स्मृति प्रकाश

पत्रिकाओं को सत्य को कल्याणकारी रूप में प्रस्तुत करना चाहिए जो सौहार्द की स्थापना करे, एक्य भाव को प्रदर्शित करे। - एस.के.शर्मा, आर्य जगत्

पत्रिकाओं का प्रभाव दीर्घ स्थायी होता है अतः सर्वाधिक महत्वपूर्ण होती हैं अतः पत्रिकाओं की विषय वस्तु का चयन इस प्रकार हो कि वे समस्त आयुवर्ग के सदस्यों को आकर्षित कर 'अविद्या के नाश तथा विद्या की वृद्धि' के उद्देश्य को पूर्ण कर सकें। - आर्य सुरेश चन्द्र अग्रवाल, आर्य वैदिक दर्शन

पत्रिकाओं का सम्पादन अतीव गुरुतर कार्य है। व्यक्ति, परिवार तथा समाज का निर्माण हो ऐसी सामग्री देना सम्पादकों का दायित्व है। -संगीत आर्य, नूतन निष्काम पत्रिका

आर्य जगत् के जितने शीर्ष विद्वान् थे वे पत्रकार भी थे अतः आर्य पत्रकारिता का स्तर उच्च होना चाहिए जिससे वे बुद्धिजीवियों को प्रभावित कर सकें ताकि आर्य सम्पादकों को राष्ट्रीय चैनलों पर भी विभिन्न विषयों पर बहस में सम्मिलित होने हेतु आमंत्रित किया जाय। -संजय सत्यार्थी, आर्य संकल्प

आर्य पत्रिकाओं में राष्ट्रीय महापुरुषों के जीवन पर अधिकाधिक प्रकाश डाला जाय तथा तदाधारित प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाय ताकि वर्तमान पीढ़ी उनके बारे में जान सकें। -नरेन्द्र आर्य, आर्यावर्त्त केसरी

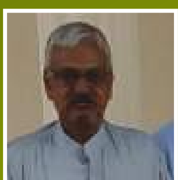

व्यक्तिगत पत्रिकाओं का कम योगदान नहीं है परन्तु उनकी समस्याएँ भी अधिक हैं जिनको दूर करने में सभी को योगदान देना चाहिए। -भानु प्रताप, वैदिक राष्ट्र

अनेक संस्थागत पत्रिकाओं के अधिकारी अपनी पत्रिकाओं के संपादकों पर अनुचित बंदिशें लगाते हैं जो उचित नहीं है, इस प्रवृत्ति से दूर रहना चाहिए, इससे संपादकों की क्रियात्मकता विकसित नहीं हो पाती। -राम निवास गुणग्राहक, गुरुकुल दर्शन

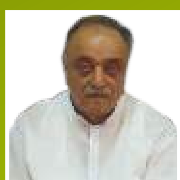

इस प्रकार के सम्मलेन अत्यधिक उपयोगी हैं, इस अवसर को सुयोग्य विद्वानों को आमंत्रित कर प्रशिक्षण शिविर का रूप दिया जाय। -सुखदेव शर्मा, वैदिक संसार

जिस आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा तथा काँच के सत्यार्थ-स्तम्भ को सहस्रों लोग देखकर प्रशंसा करते नहीं अघाते, उसे देखने **१ अक्टूबर से ३ अक्टूबर १६** में आयोज्य **सत्यार्थप्रकाश महोत्सव** में अवश्य पधारें।

संस्कृत भाषा का महत्त्व सर्वोपरि है, यह प्रचलन में बनी रहे इस कारण संस्कृत में अधिकाधिक लेखन होना चाहिए। संस्कृत संवाद इस दिशा में एक विनम्र प्रयास है। -वेद प्रकाश शर्मा, संस्कृत संवाद

सम्पादकगण समाज के पहरेदार हैं ज्योति जलाए रखना उनका दायित्व है। स्थापित पत्रिकाओं में नए लेखकों को प्रोत्साहित अवश्य करना चाहिए। -सहदेव समर्पित, शान्तिधर्मी

नए-नए लेखकों को तैयार करना भी सम्पादकों का कर्तव्य है। हमें प्रयास करना चाहिए कि दैनिक समाचार पत्रों में भी हमारे लेख छपें। -डॉ. सूर्या चतुर्वेदा, गुरुकुल त्रिवेणी

हमें देखना होगा कि आर्य पत्रिकाओं को परिवार का हर सदस्य पढ़े। अतः सामग्री का चयन करते समय सम्पादक गण इसका विशेष ध्यान रखें। -राम स्वरूप रक्षक, वेद मार्ग

आर्य सम्पादकों द्वारा एक फीचर सर्विस की निर्मिति हो ताकि छोटी पत्रिकाओं को सामग्री मिल सके। -स्वामी आर्यवेश, वैदिक सार्वदेशिक

वित्तीय संकट से निबटने हेतु सरकारी विज्ञापन प्राप्त करने के प्रयास किये जा सकते हैं। हमारी पत्रिकाओं को अत्यंत सावधान रहना होगा कि जिससे पत्रिकाओं में वैदिक मंतव्यों के खिलाफ कुछ भी न छपे। -डॉ. अनिल आर्य, युवा उद्घोष

पत्रकारिता का महत्त्व सामजिक जन-जागरण की दृष्टि से निर्विवाद है अतः सम्पादक का दायित्व भी महत्त्वपूर्ण है। पत्रिकाओं में क्षेत्रीय भाषा के लेखों का भी समावेश अवश्य होना चाहिए। -योगेश शास्त्री, आर्य विचार

आर्य समाज की पत्र-पत्रिकाएँ आर्य समाज की विचारधारा की प्रतिबिम्ब हैं। -सत्यव्रत सामवेदी, आर्य नीति

आर्य समाज के सम्पादकगण जन सामान्य से जुड़ें तथा अपनी पत्रिकाओं में जन समस्याओं के प्रभावशाली निदान प्रस्तुत करें। -विरजानंद, राजधर्म

आर्य पत्र-पत्रिकाओं की एक प्रति संसद के वाचनालय में अवश्य भेजें ताकि सांसद कभी न कभी उन्हें पढ़ें। हमारी पत्रिकाओं में आंग्ल भाषा के भी एकाधिक लेख हों ताकि अंग्रेजी ही जानने वाले जन-प्रतिनिधि भी स्वाध्याय कर सकें। -स्वामी सुमेधानन्द सांसद

गौरवशाली महोत्सवों की शृंखला में

सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव २०१६

१ अक्टूबर से ३ अक्टूबर

नवलखा महल, उदयपुर

में आयोज्य

✪ एक ऐसा अवसर जब आप आर्यजगत् के प्रख्यात् महात्माओं, विद्वानों तथा विदुषियों के सान्निध्य लाभ सहित विश्व प्रसिद्ध झीलों की नगरी का पर्यटन-लाभ भी उठा सकते हैं।

✪ वर्ष में एक बार ऋषि की कर्मस्थली-पवित्र सत्यार्थप्रकाश रचना स्थली पर अवश्य आवें ऐसा मानस बनावें।

✪ अपने आगमन की पूर्व सूचना अवश्य दें।

आजादी के आन्दोलन में भी अग्रणी रही नारी

स्वाधीनता दिवस पर विशेष

भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन का एक लम्बा इतिहास रहा है। अपनी राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक पराधीनता से मुक्ति के लिए इस आन्दोलन में अनेक राष्ट्रभक्तों ने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। 'स्त्रियों की दुनिया घर के भीतर है, शासन-सूत्र का सहज स्वामी तो पुरुष ही है' अथवा 'शासन व समर से स्त्रियों का सरोकार नहीं' जैसी तमाम पुरुषवादी स्थापनाओं को ध्वस्त करती तमाम नारियाँ भी स्वाधीनता आन्दोलन की अलमबरदार बनीं। १८५७ की क्रान्ति में जहाँ बेगम हजरत महल, बेगम जीनत महल, रानी लक्ष्मीबाई, रानी अवन्तीबाई, रानी राजेश्वरी देवी, झलकारी बाई, ऊदा देवी, अजीजनबाई जैसी वीरांगनाओं ने अंग्रेजों को लोहे के चने चबवा दिये, वहीं १८५७ के बाद अनवरत चले स्वाधीनता आन्दोलन में भी नारियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। महात्मा गाँधी ने कहा था कि- 'भारत में ब्रिटिश राज मिनटों में समाप्त हो सकता है, बशर्ते भारत की महिलाएँ ऐसा चाहें और इसकी आवश्यकता को समझें।'

इतिहास गवाह है कि १९०५ के बंग-भंग आन्दोलन में पहली बार महिलाओं ने खुलकर सार्वजनिक रूप से भाग लिया था। स्वामी श्रद्धानन्द की पुत्री वेद कुमारी और आज्ञावती ने इस आन्दोलन के दौरान महिलाओं को संगठित किया और विदेशी कपड़ों की होली जलाई। कालान्तर में १९३० में सविनय अवज्ञा आन्दोलन के दौरान वेद कुमारी की पुत्री सत्यवती ने भी सक्रिय भूमिका निभायी। सत्यवती ने १९२८ में साइमन कमीशन के दिल्ली आगमन पर काले झण्डों से उसका विरोध किया था। १९३० के सविनय अवज्ञा आन्दोलन के दौरान ही अरुणा आसफ अली तेजी से उभरीं और इस दौरान अकेले दिल्ली से १९०० महिलाओं ने गिरफ्तारी दी। गाँधी इरविन समझौते के बाद जहाँ अन्य आन्दोलनकारी नेता जेल से रिहा कर दिये गये थे वहीं अरुणा आसफ अली को बहुत दबाव पर बाद में छोड़ा गया। सविनय अवज्ञा आन्दोलन के दौरान जब सभी बड़े नेता गिरफ्तार कर लिये गये, तो कलकत्ता के कांग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता एक महिला नेली सेनगुप्त ने की। क्रान्तिकारी आन्दोलन में भी महिलाओं ने भागीदारी की। १९१२-१४ में बिहार में जतरा भगत ने जनजातियों को लेकर टाना आन्दोलन चलाया। उनकी गिरफ्तारी के बाद उसी गाँव की महिला देवमनियाँ उरांइन ने इस आन्दोलन की बागडोर सम्भाली। १९३१-३२ के कोल आन्दोलन में भी आदिवासी महिलाओं ने सक्रिय भूमिका निभायी थी। स्वाधीनता की लड़ाई में बिरसा मुण्डा के सेनापति गया मुण्डा की पत्नी 'माकी' बच्चे को गोद में लेकर फरसा-बलुआ से अंग्रेजों से अन्त तक लड़ती रहीं। १९३०-३२ में मणिपुर में अंग्रेजों के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष का नेतृत्व नागा रानी गुइंदाल्यू ने किया। इनसे भयभीत अंग्रेजों ने इनकी गिरफ्तारी पर पुरस्कार की घोषणा की और कर माफ करने के आश्वासन भी दिये। १९३० में बंगाल में सूर्यसेन के नेतृत्व में हुये चटगाँव विद्रोह में युवा

महिलाओं ने पहली बार क्रान्तिकारी आन्दोलनों में स्वयं भाग लिया। ये क्रान्तिकारी महिलायें क्रान्तिकारियों को शरण देने, संदेश पहुँचाने और हथियारों की रक्षा करने से लेकर बन्दूक चलाने तक में माहिर थीं। इन्हीं में से एक प्रीतिलता वाडेयर ने एक यूरोपीय क्लब पर हमला किया और कैद से बचने हेतु आत्महत्या कर ली। कल्पनादत्त को सूर्यसेन के साथ ही गिरफ्तार कर १६३३ में आजीवन कारावास की सजा सुनायी गयी और ५ साल के लिये अण्डमान की काल कोठरी में कैद कर दिया गया। दिसम्बर १६३१ में कोमिल्ला की दो स्कूली छात्राओं शान्ति घोष और सुनीति चौधरी ने जिला कलेक्टर को दिनदहाड़े गोली मार दी और काला पानी की सजा हुई, तो ६ फरवरी १६३२ को बीना दास ने कलकत्ता विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में उपाधि ग्रहण करने के समय गवर्नर पर बहुत नजदीक से गोली चलाकर अंग्रेजी हुकूमत को चुनौती दी। सुहासिनी अली तथा रेणुसेन ने भी अपनी क्रान्तिकारी गतिविधियों से १६३०-३४ के मध्य बंगाल में धूम मचा दी थी।

चन्द्रशेखर आजाद के अनुरोध पर 'दि फिलॉसाफी ऑफ बम' दस्तावेज तैयार करने वाले क्रान्तिकारी भगवतीचरण वोहरा की पत्नी 'दुर्गा भाभी' नाम से मशहूर दुर्गा देवी बोहरा ने भगत सिंह को लाहौर जेल से छुड़ाने का प्रयास किया। १६२८ में जब अंग्रेज अफसर साण्डर्स को मारने के बाद भगत सिंह व राजगुरु लाहौर से कलकत्ता के लिए निकले, तो कोई उन्हें पहचान न सके इसलिए दुर्गा भाभी की सलाह पर एक सुनियोजित रणनीति के तहत भगत सिंह उनके पति, दुर्गा भाभी उनकी पत्नी और राजगुरु नौकर बनकर वहाँ से निकल लिये। १६२७ में लाला लाजपतराय की मौत का बदला लेने के लिये लाहौर में बुलायी गई बैठक की अध्यक्षता दुर्गा भाभी ने की। बैठक में अंग्रेज पुलिस अधीक्षक जे. ए. स्कॉट को मारने का जिम्मा वे खुद लेना चाहती थीं, पर संगठन ने उन्हें यह जिम्मेदारी नहीं दी। बम्बई के गर्वनर हेली को मारने की योजना में टेलर नामक एक अंग्रेज अफसर घायल हो गया, जिसपर गोली दुर्गा भाभी ने ही चलायी थी। इस केस में उनके विरुद्ध वारण्ट भी जारी हुआ और दो वर्ष से ज्यादा समय तक फरार रहने के बाद १२ सितम्बर १६३१ को दुर्गा भाभी लाहौर में गिरफ्तार कर ली गयीं। यह संयोग ही कहा जायेगा कि भगत सिंह और दुर्गा भाभी, दोनों की जन्म शताब्दी वर्ष २००७ में एक साथ मनाई गई। क्रान्तिकारी आन्दोलन के दौरान सुशीला दीदी ने भी प्रमुख भूमिका निभायी और काकोरी काण्ड के कैदियों के मुकदमे की पैरवी के लिए अपनी स्वर्गीय माँ द्वारा शादी की खातिर रखा १० तोला सोना उठाकर दान में दिया। यही नहीं उन्होंने क्रान्तिकारियों का केस लड़ने हेतु 'मेवाड़पति' नामक नाटक खेलकर चन्दा भी इकट्ठा किया। १६३० के सविनय अविज्ञा आन्दोलन में 'इन्दुमति' के छ्द्म नाम से सुशीला दीदी ने भाग लिया और गिरफ्तार हुयीं। इसी प्रकार हसरत मोहानी को जब जेल की सजा मिली तो उनके कुछ दोस्तों ने जेल की चक्की पीसने के बजाय उनसे माफी माँगकर छूटने की सलाह दी। इसकी जानकारी जब बेगम हसरत मोहानी को हुई तो उन्होंने पति की जमकर हौसला अफजाई की और दोस्तों को नसीहत भी दी। मर्दाना वेश धारण कर उन्होंने स्वतंत्रता आन्दोलन में खुलकर भाग लिया और बाल गंगाधर तिलक के गरम दल में शामिल होने पर गिरफ्तार कर जेल भेज दी गयीं, जहाँ उन्होंने चक्की भी पीसी। यही नहीं महिला मताधिकार को लेकर १६१७ में सरोजिनी नायडू के नेतृत्व में वायसराय से मिलने गये प्रतिनिधिमण्डल में वह भी शामिल थीं।

१६२५ में कानपुर में हुये कांग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता कर 'भारत कोकिला' के नाम से मशहूर सरोजिनी नायडू को कांग्रेस की प्रथम भारतीय महिला अध्यक्ष बनने का गौरव प्राप्त हुआ। सरोजिनी नायडू ने भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन के इतिहास में कई पृष्ठ जोड़े।

कमला देवी चट्टोपाध्याय ने १९२१ में असहयोग आन्दोलन में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। इन्होंने बर्लिन में अन्तर्राष्ट्रीय महिला सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व कर तिरंगा झंडा फहराया। १९२१ के दौर में अली बन्धुओं की माँ बाई अमन ने भी लाहौर से निकल तमाम महत्वपूर्ण नगरों का दौरा किया और जगह-जगह हिन्दू, मुस्लिम एकता का संदेश फैलाया। सितम्बर १९२२ में बाई अमन ने शिमला दौरे के समय वहाँ की फैशन परस्त महिलाओं को खादी पहनने की प्रेरणा दी। १९४२ के भारत छोड़ो आन्दोलन में भी महिलाओं ने प्रमुख भूमिका निभायी। अरुणा आसफ अली व सुचेता कृपलानी ने अन्य आन्दोलनकारियों के साथ भूमिगत होकर आन्दोलन को आगे बढ़ाया तो ऊषा मेहता ने भूमिगत रहकर कांग्रेस-रेडियो से प्रसारण किया। अरुणा आसफ अली को तो १९४२ में उनकी सक्रिय भूमिका के कारण 'दैनिक ट्रिब्यून' ने '१९४२ की रानी झाँसी' नाम दिया। अरुणा आसफ अली 'नमक कानून तोड़ो आन्दोलन' के दौरान भी जेल गयीं। १९४२ के अन्दोलन के दौरान ही दिल्ली में 'गर्ल गाइड' की २४ लड़कियाँ अपनी पोशाक पर विदेशी चिह्न धारण करने तथा यूनियन जैक फहराने से इनकार करने के कारण अंग्रेजी हुकूमत द्वारा गिरफ्तार हुईं और उनकी बेदर्दी से पिटाई की गयी। इसी आन्दोलन के दौरान तमलुक की ७३ वर्षीया किसान विधवा मातंगिनी हाजरा ने गोली लग जाने के बावजूद राष्ट्रीय ध्वज को अन्त तक ऊँचा रखा।

महिलाओं ने परोक्ष रूप से भी स्वतंत्रता संघर्ष में प्रभावी भूमिका निभा रहे लोगों को सराहा। सरदार वल्लभ भाई पटेल को 'सरदार' की उपाधि बारदोली सत्याग्रह के दौरान वहाँ की महिलाओं ने ही दी। महात्मा गाँधी को स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान उनकी पत्नी कस्तूरबा गाँधी ने पूरा समर्थन दिया। उनकी नियमित सेवा व अनुशासन के कारण ही महात्मा गाँधी आजीवन अपने लम्बे उपवासों और विदेशी चिकित्सा के पूर्ण निषेध के बावजूद स्वस्थ रहे। अपने व्यक्तिगत हितों को उन्होंने राष्ट्र की खातिर तिलांजलि दे दी। भारत छोड़ो आन्दोलन प्रस्ताव पारित होने के बाद महात्मा गाँधी को आगा खाँ पैलेस (पूना) में कैद कर लिया गया। कस्तूरबा गाँधी भी उनके साथ जेल गयीं। डॉ. सुशीला नैयर, जो कि गाँधी जी की निजी डाक्टर भी थीं, भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान १९४२-४४ तक महात्मा गाँधी के साथ जेल में रहीं।

इन्दिरा गाँधी ने ६ अप्रैल १९३० को बच्चों को लेकर 'वानर सेना' का गठन किया, जिसने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान अपना अद्भुत योगदान दिया। यह सेना स्वतंत्रता सेनानियों को सूचना देने और सूचना लेने का कार्य करती व हर प्रकार से उनकी मदद करती। विजयलक्ष्मी पण्डित भी गाँधी जी से प्रभावित होकर जंग-ए-आजादी में कूद पड़ीं। वह हर आन्दोलन में आगे रहतीं, जेल जातीं, रिहा होतीं, और फिर आन्दोलन में जुट जातीं। १९४५ में संयुक्त राष्ट्र संघ के सैन फ्रांसिस्को सम्मेलन में विजयलक्ष्मी पण्डित ने भारत का प्रतिनिधित्व भी किया। सुभाषचन्द्र बोस की 'आरजी हुकूमते आजाद हिन्द सरकार' में महिला विभाग की मंत्री तथा आजाद हिन्द फौज की रानी झाँसी रेजीमेण्ट की कमाण्डिंग ऑफिसर रहीं कैप्टन लक्ष्मी सहगल ने आजादी में प्रमुख भूमिका निभायी। सुभाष चन्द्र बोस के आह्वान पर उन्होंने सरकारी डॉक्टर की नौकरी छोड़ दी। कैप्टन सहगल के साथ आजाद हिन्द फौज की रानी झाँसी रेजीमेण्ट में लेफ्टिनेण्ट रहीं ले. मानवती आर्य्या ने भी सक्रिय भूमिका निभायी।

भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन की गूँज भारत के बाहर भी सुनायी दी। विदेशों में रह रही तमाम महिलाओं ने भारतीय संस्कृति से प्रभावित होकर भारत व अन्य देशों में स्वतंत्रता आन्दोलन की अलख जगायी। लन्दन में जन्मीं एनीबेसेन्ट ने 'न्यू इण्डिया' और 'कामन वील' पत्रों का सम्पादन करते हुये आयरलैण्ड के 'स्वराज्य लीग' की तर्ज पर सितम्बर १९१६ में

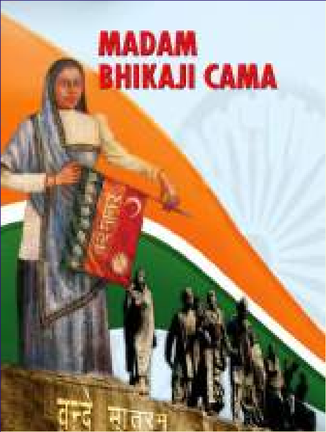

'भारतीय स्वराज्य लीग' (होमरुल लीग) की स्थापना की, जिसका उद्देश्य स्वशासन स्थापित करना था। एनीबेसेन्ट को कांग्रेस की प्रथम महिला अध्यक्ष होने का गौरव भी प्राप्त है। एनीबेसेन्ट ने ही १८९८ में बनारस में सेन्ट्रल हिन्दू कॉलेज की नींव रखी, जिसे १९१६ में महामना मदनमोहन मालवीय ने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के रूप में विकसित किया। भारतीय मूल की फ्रांसीसी नागरिक मैडम भीकाजी कामा ने लन्दन, जर्मनी तथा अमेरिका का भ्रमण कर भारत की स्वतंत्रता के पक्ष में माहौल बनाया। उनके द्वारा पेरिस से प्रकाशित 'वन्देमातरम्' पत्र प्रवासी भारतीयों में काफी लोकप्रिय हुआ। १९०७ में जर्मनी के स्टटगार्ट में हुयी अन्तर्राष्ट्रीय सोशलिस्ट कांग्रेस में मैडम भीकाजी कामा ने प्रस्ताव रखा कि- 'भारत में ब्रिटिश शासन जारी रहना मानवता के नाम पर कलंक है। एक महान् देश भारत के हितों को इससे भारी क्षति पहुँच रही है।' उन्होंने लोगों से भारत को दासता से मुक्ति दिलाने में सहयोग की अपील की और भारतवासियों का आह्वान किया कि- 'आगे बढ़ो, हम हिन्दुस्तानी हैं और हिन्दुस्तान हिन्दुस्तानियों का है।' यही नहीं मैडम भीकाजी कामा ने इस कांफ्रेंस में 'वन्देमातरम्' अंकित भारतीय ध्वज फहरा कर अंग्रेजों को कड़ी चुनौती दी। मैडम भीकाजी कामा लन्दन में दादाभाई नौरोजी की प्राइवेट सेक्रेटरी भी रहीं। आयरलैंड की मूल निवासी और स्वामी विवेकानन्द की शिष्या मारग्रेट नोबुल (भगिनी निवेदिता) ने भी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में तमाम मौकों पर अपनी सक्रियता दिखायी। कलकत्ता विश्वविद्यालय में ११ फरवरी १९०५ को आयोजित दीक्षान्त समारोह में वायसराय लॉर्ड कर्जन द्वारा भारतीय युवकों के प्रति अपमानजनक शब्दों का उपयोग करने पर भगिनी निवेदिता ने खड़े होकर निर्भीकता के साथ प्रतिकार किया। इंग्लैण्ड के ब्रिटिश नौसेना के एडमिरल की पुत्री मैडेलिन ने भी गाँधी जी से प्रभावित होकर भारत को अपनी कर्मभूमि बनाया। 'मीरा बहन' के नाम से मशहूर मैडेलिन भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान महात्मा गाँधी के साथ आगा खाँ महल में कैद रहीं। मीरा बहन ने अमेरिका व ब्रिटेन में भारत की स्वतंत्रता के पक्ष में माहौल बनाया। मीरा बहन के साथ-साथ ब्रिटिश महिला म्यूरियल लिस्टर भी गाँधी जी से प्रभावित होकर भारत आयीं और अपने देश इंग्लैण्ड में भारत की स्वतंत्रता के पक्ष में माहौल बनाने का प्रयास किया। द्वितीय गोलमेज कांफ्रेन्स के दौरान गाँधी जी इंग्लैण्ड में म्यूरियल लिस्टर द्वारा स्थापित 'किंग्सवे हॉल' में ही ठहरे थे। इस दौरान म्यूरियल लिस्टर ने गाँधी जी के सम्मान में एक भव्य समारोह भी आयोजित किया था।

इन वीरांगनाओं के अनन्य राष्ट्रप्रेम, अदम्य साहस, अटूट प्रतिबद्धता और उनमें से कईयों का गौरवमयी बलिदान भारतीय इतिहास की एक जीवन्त दास्तां है। हो सकता है उनमें से कईयों को इतिहास ने विस्मृत कर दिया हो, पर लोक चेतना में वे अभी भी मौजूद हैं। ये वीरांगनायें प्रेरणा स्रोत के रूप में राष्ट्रीय चेतना की संवाहक हैं और स्वतंत्रता संग्राम में इनका योगदान अमूल्य एवं अतुलनीय है।

- टाइप-५ निदेशक बंगला, पोस्टल ऑफीसर्स कॉलोनी
निकट जेडीए सर्किल,
जोधपुर (राजस्थान)- ३४२००१
मो.- ०९४१३६६६५९९

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित
सत्यार्थप्रकाश
अवश्य खरीदें।
घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - 313001
अब मात्र आधी कीमत में
₹ ४०
३५०० रु. सैंकड़ा
शीघ्र मंगवाएँ

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें
"सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।
पूर्ण विवरण पृष्ठ १५ पर देखें।

स्थितप्रज्ञस्य का भाषा?

स्थितधी: किं प्रभाषेत किमासीत व्रजेत किम्। - २/५४

श्रीमद्भागवतगीता के द्वितीय अध्याय में अर्जुन ने प्रश्न किया कि ज्ञानी का व्यवहार कैसा होता है? जिस पुरुष को ज्ञान हो गया वह किस तरह बोलता है? कैसे चलता है? किस तरह रहता है? उसकी प्रतिक्रियाएँ किस तरह होती हैं?

वस्तुतः व्यवहार ज्ञानकर्मरूप होता है। हम इन्द्रियों से विषय ग्रहण करते हैं, अनुभव करते हैं और किए हुए विषयों के प्रति

प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं ज्ञान और प्रतिक्रिया यही व्यवहार है। यदि कहीं आग लगी है तो मेरी कुछ न कुछ प्रतिक्रिया अवश्य होगी। या तो आग में झुलस जाऊँ, उससे दूर भागूँ या उसे स्वयं बुझाने का प्रयास करूँ या फायर बिग्रेड वालों को सूचना दूँ। भूख लगती है तो उसे शान्त करने का प्रयास करना ही पड़ता है। मैं व्यवहार न करूँ, ऐसा हो नहीं सकता। जब तक जीवन है, ज्ञानकर्मरूप व्यवहार है। व्यवहार करना जीवित मनुष्य के लिए अनिवार्य है। जीवन में हमें पशु-पक्षी, वनस्पति, व्यक्ति, परिस्थिति के साथ देश काल में रहना पड़ता है। परन्तु उनके बीच कैसे रहें, यह समझना आवश्यक है। कभी-कभी लोग समझते हैं कि पढ़ाई हो गई, नौकरी लग गई, शादी हो गई तो बस और कुछ पढ़ने की या समझने की क्या आवश्यकता है। परन्तु उनके जीवन में भी समस्याएँ रहती हैं, प्रश्न रहते हैं। वे पूछते हैं कि अमुक व्यक्ति मुझसे द्वेष करता है तो मैं कैसी प्रतिक्रिया करूँ, मेरे लड़के सुनते नहीं हैं, पढ़ाई नहीं करते हैं तो मैं क्या करूँ? कोई कृतघ्न है, कोई विश्वासघात करता है तो उसके साथ कैसा व्यवहार करूँ? इस प्रकार हमारे जीवन में अनेक प्रश्न आते रहते हैं और यदि एक-एक प्रश्न का समाधान करना चाहेंगे तो कभी भी समस्या का पूरा समाधान नहीं हो सकता। जीवन में सम्यक् प्रतिक्रिया के लिए जीवन दर्शन की आवश्यकता होती है।

एक बार यह सुदृष्टि प्राप्त हो जाए तो फिर चाहे कैसी भी परिस्थिति आये हमें समझ में आ जायेगा कि हम कैसे व्यवहार करें? हमें समस्या इसलिए है कि हमारे जीवन में कोई दृष्टि नहीं है, दर्शन नहीं है। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि हमें विचार करना आता नहीं। हम क्या विचार करें इससे ज्यादा महत्वपूर्ण यह है कि विचार कैसे करें? एक बार विचार प्रणाली मालूम हो जाये तो समस्याओं का समाधान हो सकता है। यदि हमारी दृष्टि ठीक है तो यह सृष्टि भी हमें सुन्दर लगेगी। सफल जीवन के लिए सम्यक् दृष्टि का होना आवश्यक है।

जीवन का दर्शन या दृष्टि ही ज्ञान है। हमारी प्रतिक्रिया, हमारा कर्म, हमारा व्यवहार इस पर निर्भर करता है कि हमारा जीवन दर्शन क्या है? आखिर एक ही सृष्टि होने पर भी सबके व्यवहार एवं प्रतिक्रिया अलग-अलग क्यों हैं? इसका कारण है सबका जीवन दर्शन अलग-अलग होना। प्रत्येक व्यक्ति का जीवनदर्शन जरूर है, जीवन मूल्य है, आदर्श है। सबकी बुद्धि की परिपक्वता अलग-अलग है, अतः दृष्टि में भेद है। एक बच्चे का व्यवहार अलग होता है तो युवक का उससे अलग। उसमें भी जो पढ़ा लिखा है वह एक अलग ढंग से वर्ताव करता है, जो असंस्कारित है उसका व्यवहार भिन्न होता है। किसी के जीवन में यदि पैसा ही लक्ष्य है तो वह दिन-रात यही सोचता है कि अधिक से अधिक धन मुझे कैसे मिलेगा? ऐसा व्यक्ति यदि हिमालय में कहीं गरम पानी का झरना या कुण्ड देखता है तो यही विचार उसके मन में आता है कि यदि मैं यहाँ चाय की दुकान खोल लूँ तो बहुत लाभ होगा। उसके मन में व्यापार का ही विचार आता है। यदि कोई भक्त हो तो वह जब गरम पानी के स्रोत को देखता है तो उसे भगवान की करुणा का स्मरण होता है। वह सोचता है देखो भगवान कितने कृपालु हैं, उन्होंने इस ठण्डी जगह में भी लोगों के लिए गर्म पानी की व्यवस्था कर दी है। इस तरह दार्शनिक, संत, वैज्ञानिक, कवि, चित्रकार सबकी प्रतिक्रिया, व्यवहार भिन्न-भिन्न होते हैं क्योंकि सबकी दृष्टि अलग-अलग है।

इस सृष्टि में असंख्य नामरूप हैं, विविधता है। जड़, चेतन, गुण, दोषमय यह सृष्टि है। इन अनेक नाम रूपों के पीछे एक ही तत्व अनुस्यूत है, व्याप्त है। जब एकत्व का ज्ञान नहीं है तो केवल भेद-दर्शन ही होता है। विविधता को ही देखते हैं तो एक के साथ राग तो दूसरे के साथ द्वेष होता है। भेद-बुद्धि के कारण

राग-द्वेष होने से कर्म भी राग-द्वेष पूर्वक होने लगते हैं। व्यवहार भी राग-द्वेष पूर्वक होता है। तब वस्तु जैसी है वैसी हम नहीं देखते। दृष्टि रागद्वेषमय हो जाती है। एक से आसक्ति होती है, दूसरे से दूर होने का प्रयास करते हैं। एक परिवार में अनेक सदस्य होते हैं जैसे पिता, पुत्र, माता व पत्नी आदि। सभी शारीरिक रूप से अलग-अलग हैं परन्तु सबमें यह भाव होता है कि हम एक परिवार के हैं। उसका फल यह होता है कि सबमें प्रेम होता है। तब वहाँ किसी कानून कायदे या संविधान की आवश्यकता नहीं होती। परन्तु जब भेद आ जाता है तो दो भाई सीधे मुँह बात नहीं करते। हमारी बुद्धि में जब एकत्व का भाव नहीं होता तब रंगभेद, वर्णभेद, धर्मभेद इस प्रकार के अनेक भेद खड़े हो जाते हैं और राग-द्वेष उत्पन्न हो जाते हैं। स्थितप्रज्ञ व्यक्ति उसमें उसी तत्व को देखता है और आत्मरूप से अपने से एकत्व का अनुभव करता है। उसमें राग, द्वेष, घृणा निवृत्त हो जाती है। वह तब सर्वभूत के हित में रमता रहता है। वह केवल मानव मात्र का हितैषी नहीं बल्कि सर्वभूत का हितैषी होता है। वह मानव सेवा मात्र को ही माधव सेवा नहीं मानता अपितु पशु, पक्षी, वनस्पति सबके प्रति उसका प्रेम व्यापक होता है।

"दृते दृꣳह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्। मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।।" - यजु. ३६/१८

हम जिस सुख को बाहर ढूढ़ रहे हैं स्थितप्रज्ञ उसका अनुभव अपने भीतर ही करता है। लोगों के जीवन को देखें तो मालूम पड़ेगा कि लोग दिन रात व्यस्त हैं। वे कहते हैं कि मरने की भी फुर्सत नहीं है। सभी लोग कहीं पहुँचना चाहते हैं, कुछ पाना चाहते हैं या कुछ बनना चाहते हैं। सुख प्राप्ति के लिए कोई प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति बनना चाहता है, कोई अमेरिका जाना चाहता है। बनना, बिगड़ना, छोड़ना, पकड़ना, मिलना बिछुड़ना सारी चेष्टाओं का लक्ष्य सुख प्राप्ति ही है। वस्तुतः जिस सुख को हम बाहर ढूढ़ते हैं वह भीतर ही है। जिसने यह जान लिया, उसका बाहर भटकना बंद हो जायेगा। शान्ति या आनन्द हम बाहर मानते हैं। तो गुलामी मिलती है, शान्ति नहीं। सुख उसे कहते हैं जो दुःख को समाप्त कर दे। जिसने अपनी दृष्टि अन्तर्मुखी कर ली और सुख को पहचान लिया उसकी पराधीनता समाप्त हो जाती है। अज्ञानी व्यक्ति विषयों का चिन्तन मात्र करने से अपने को बन्धन में डाल लेता है और ज्ञानी सारे विषयों में रहते हुए भी मुक्त रहता है। आनन्द को प्राप्त करता है। यदि एक बार भीतरी आनन्द आ गया तो फिर चाहे कोई भी देश, काल, परिस्थिति हो उसका आनन्द कम नहीं होता है।

स्थितप्रज्ञ व्यक्ति में असंगता का गुण आ जाता है। वह जान लेता है कि मैं शरीर, मन, बुद्धि व प्राण नहीं हूँ इनसे अलग हूँ। ऐसे ज्ञानी के विषय में जीवन्मुक्तानंदलहरी में भगवान शंकराचार्य जी कहते हैं कि ज्ञानी मौनियों में मौनी, गुणवानों में गुणी, विद्वानों में विद्वान्, मूर्खों में मूर्ख, बच्चों में बच्चा, युवकों में युवा और भोगियों में भोगी जैसा बन जाता है और सब कुछ होने पर भी वह इन सबसे अलग रहता है। जिसको ज्ञान नहीं है, उसकी हालत तो रेशम के कीड़े की तरह है। वह स्वयं ही अपने को फँसा लेता है। गुण-दोष को समझने के लिए असंगता की आवश्यकता होती है। धृतराष्ट न्याय नहीं कर पाया क्योंकि वह अपने पुत्र से, सिंहासन से, अपने को अलग नहीं कर पाया। आध्यात्मिक दृष्टि से देखें तो जिसने देह, मन आदि से अलग आत्मा की असंगता को पहचान लिया है उसे जरा-मरण का भय नहीं रहता। इस संसार में जड़ पदार्थों के साथ, चेतन प्राणियों के साथ तथा द्वन्द्वात्मक परिस्थितियों के मध्य याने निन्दा-स्तुति, मान-अपमान, शीत-उष्ण, लाभ-हानि के बीच रहना पड़ता है। स्थितप्रज्ञ व्यक्ति सबसे प्रभावित नहीं होता। हम लोग किसी को आवश्यकता से अधिक महत्व दे रहे हैं या फिर किसी की उपेक्षा कर रहे हैं जिसके कारण हमारे जीवन में असन्तुलन आ गया है। पैसा आवश्यक हो सकता है परन्तु वह जीवन का लक्ष्य नहीं हो सकता।

स्थितप्रज्ञ व्यक्ति सम्पूर्ण कामनाओं को त्यागकर ममतारहित, अहंकार रहित और स्पृहारहित हुआ विचरता है वही शान्ति को प्राप्त होता है। ब्रह्म को प्राप्त हुए पुरुष की यही स्थिति है, इसको प्राप्त होकर योगी कभी मोहित नहीं होता और अंतकाल में इस ब्राह्मी स्थिति में स्थित होकर ब्रह्मानन्द को प्राप्त हो जाता है।

- स्वामी श्री तजोमयानन्द

साभार- श्रीमद् भगवद्गीता मर्म और संदेश

सत्यार्थ प्रकाश पहेली-५/१६ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। **सत्यार्थ प्रकाश पहेली-५/१६** के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्री किशनाराम आर्य, बीलू (राज.), श्रीमती उषा आर्या, उदयपुर (राज.), श्री मुकेश पाठक, उदयपुर (राज.), श्रीमती सुनीता भदौरिया, ग्वालियर (म. प्र.), श्री सत्यनारायण तोलम्बिया, शाहपुरा (राज.), मीना वासुदेवभाई ठक्कर, साबरकांठा (गुजरात), श्री अमीत कुमार, झुन्झुनू (राज.), श्री महेशचन्द्र सोनी, बीकानेर (राज.), श्री वासुदेवभाई मगनलाल ठक्कर, बनासकांठा (गुजरात), श्री गोर्धनलाल झवर, आष्टा (म. प्र.), धर्मिष्ठा वासुदेवभाई ठककर, साबरकांठा (गुजरात), श्री नारायणलाल राव, उदयपुर (राज.), श्री सरस्वती प्रसाद गोयल, सवाई माधोपुर (राज.)। उपर्युक्त सभी सत्यार्थ सौरभ के सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

9 अगस्त- का ऐतिहासिक दिन

ऋषिकेश कुमार गौतम

राम मनोहर लोहिया ने भारत छोड़ो आंदोलन की पचीसवीं वर्षगाँठ पर लिखा था, ‘६ अगस्त का दिन हम भारतवासियों के जीवन की महान् घटना है और यह हमेशा बनी रहेगी। १५ अगस्त राज्य की महान् घटना है, अभी तक हम १५ अगस्त को धूमधाम से मनाते हैं, क्योंकि उस दिन ब्रिटिश वायसराय माउंटबेटन ने भारत के प्रधानमंत्री के साथ हाथ मिलाया था और क्षतिग्रस्त आजादी हमारे देश को दी थी, वहीं ‘६ अगस्त देश की जनता की उस इच्छा की अभिव्यक्ति थी जिसमें उसने यह ठान लिया था कि हमें आजादी चाहिए और हम आजादी ले कर रहेंगे।’

“९ अगस्त देश की जनता की उस इच्छा की अभिव्यक्ति थी जिसमें उसने यह ठान लिया था कि हमें आजादी चाहिए और हम आजादी ले कर रहेंगे।”

हमारे देश के लम्बे इतिहास में पहली बार करोड़ों लोगों ने आजादी की अपनी इच्छा जाहिर की थी। कुछ जगहों पर इसे जोरदार ढंग से प्रकट भी किया गया था।

अगस्त क्रान्ति यानी ६ अगस्त। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में अगस्त क्रान्ति के नाम से मशहूर भारत छोड़ो आन्दोलन का करीब तीन-चार साल का दौर अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होने के साथ पेचीदा भी था। यह आन्दोलन देशव्यापी था जिसमें बड़े पैमाने पर भारत की जनता ने हिस्सेदारी की और अभूतपूर्व साहस और सहनशीलता का परिचय दिया।

लोहिया ने ट्राटस्की के हवाले से लिखा है कि ‘रूस की क्रान्ति में वहाँ की सिर्फ एक प्रतिशत जनता ने हिस्सा लिया था, जबकि भारत की अगस्त क्रान्ति में देश के बीस प्रतिशत लोगों ने हिस्सेदारी की थी।’ ८ अगस्त १६४२ को ‘भारत छोड़ो’ प्रस्ताव पारित हुआ और ६ अगस्त की रात को कांग्रेस के बड़े नेता गिरफ्तार कर लिए गए।

इस वजह से आन्दोलन की सुनिश्चित कार्ययोजना नहीं बन पाई थी। कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का अपेक्षाकृत युवा नेतृत्व सक्रिय था, लेकिन उसे भूमिगत रह कर काम करना पड़ रहा था। इसी दौरान जेपी ने क्रान्तिकारियों का मार्गदर्शन करने, उनका हौसला अफजाई करने और आन्दोलन का चरित्र और तरीका स्पष्ट करने वाले ‘आजादी के सैनिकों के नाम’ दो लम्बे पत्र अज्ञात स्थानों से लिखे। भारत छोड़ो आन्दोलन के महत्त्व का एक पक्ष यह भी है कि आन्दोलन के दौरान जनता खुद अपनी नेता थी।

‘भारत छोड़ो आन्दोलन’ देश की आजादी के लिए एक निर्णायक मोड़ था। विभिन्न स्रोतों से आजादी की जो इच्छा और उसे हासिल करने की जो ताकत भारत में बनी थी, उसका अन्तिम प्रदर्शन ‘भारत छोड़ो आन्दोलन’ में हुआ। आन्दोलन ने इस बात पर निर्णय किया गया कि आजादी की इच्छा में भले ही नेताओं का भी साथ था लेकिन उसे हासिल करने की ताकत निर्णायक रूप से जनता की थी।

यह ध्यान देने की बात है कि गाँधीजी ने आन्दोलन को समावेशी बनाने के लिए अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक में दिए अपने भाषण में समाज के सभी तबकों को सम्बोधित किया था- जनता, पत्रकार, नरेश, सरकारी अमला, सैनिक, विद्यार्थी आदि। यहाँ तक कि उन्होंने अंग्रेजों, यूरोपीय देशों और मित्र राष्टों को भी अपने उस भाषण के जरिए सम्बोधित किया था। सभी तबकों और समूहों से देश की आजादी के लिए ‘करो या मरो’ के उनके व्यापक आह्वान का आधार उनका पिछले पचीस सालों के संघर्ष का अनुभव था। भारत छोड़ो आन्दोलन के जो भी घटनाक्रम, प्रभाव और विवाद रहे हों, मूल बात थी भारत की जनता में लम्बे समय से पल रही आजादी की इच्छा का विस्फोट। इस आन्दोलन के दबाव में भारत के आधुनिकतावादी मध्यमवर्ग से लेकर

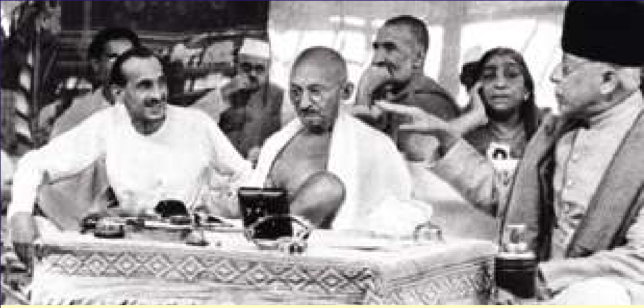

सामन्ती नरेशों तक को यह लग गया था कि अंग्रेजों को अब भारत छोड़ना होगा। इसलिए अपने वर्ग-स्वार्थ को बचाने और मजबूत करने की फिक्र उन्हें लगी। प्रशासन का लौह-शिकंजा और उसे चलाने वाली भाषा तो अंग्रेजों की बनी ही रही, साथ ही विकास का मॉडल भी वही रहा।

भारत का 'लोकतांत्रिक, समाजवादी और धर्मनिरपेक्ष' संविधान भी पूँजीवाद और सामन्तवाद के गठजोड़ की छाया से पूरी तरह नहीं बच पाया। अंग्रेजों के वैभव और रौब-दाब की विरासत, जिससे भारत की जनता के दिलों में भय बैठाया जाता था, भारत के शासक वर्ग ने अपनाए रखी। दिन ब दिन वह उसे मजबूत भी करता चला गया। गरीबी, भ्रष्टाचार, महँगाई, बीमारी, बेरोजगारी, शोषण, कुपोषण, विस्थापन और किसानों की आत्महत्याओं का मलबा बने हिन्दुस्तान में शासक वर्ग का यह वैभव हमें अश्लील जरूर लगता है लेकिन वह उसी में डूबा हुआ है।

सेवाग्राम और साबरमती आश्रम के छोटे और कच्चे कक्षों में बैठ कर गाँधी को दुनिया की सबसे बड़ी साम्राज्यशाही से राजनीतिक-कूटनीतिक संवाद करने में असुविधा नहीं हुई। यहाँ तक कि अपना चिन्तन-लेखन-आन्दोलन करने में भी नहीं। लेकिन भारत के शासक वर्ग ने गाँधी से कोई प्रेरणा नहीं ली। गाँधी का आदर्श अगर सही नहीं था तो वह सादगी का कोई और आदर्श सामने रख सकते थे, लेकिन उनके जैसी कोई बात इतने वर्षों बाद आज तक नहीं दिखी ।

अपने जमाने में राममनोहर लोहिया ने आजाद भारत के शासक-वर्ग और शासनतंत्र की सतत् और विस्तृत आलोचना की थी। उन्होंने उसे अंग्रेजी राज का विस्तार बताया था। शायद उन्हें लगा होगा कि उनकी आलोचना से राजनेताओं और शासक वर्ग का चरित्र बदलेगा, शासनतंत्र में परिवर्तन आएगा और भारत की अवरुद्ध क्रान्ति आगे बढ़ेगी, लेकिन इतने सालों बाद भी उनके इस कथन का जरा-सा भी असर हमारे शासक-वर्ग में नहीं हुआ ।

आज जब हम अगस्त क्रान्ति की सालगिरह मना रहे हैं तो सोचें कि क्या हम जनता का पक्ष मजबूत करना चाहते हैं? या स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रेरणा-प्रतीकों, प्रसंगों और विभूतियों का उत्सव मना कर उनके सारतत्त्व को खत्म कर देना चाहते हैं?

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ९/१६

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (चतुर्थ समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१	म	■	२	श	२	■	३		वें ३	■
■	४	द	■	५	ठे	■	६	स	६	न ६
७	मा	७	७	न ७	■	■	■	८ ओ		८

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. जन्मस्थल को शुद्ध करके वहाँ क्या करें?

२. बालक का जन्म कौन से महीने में उत्तम माना गया है?

३. गर्भ की अतिविशेष रक्षा किस महीने से अत्यन्त सावधानीपूर्वक करने के निर्देश हैं?

४. जन्मते ही बालक का क्या नाम होता है?

५. प्रसूता माता को कौन से दिन बाहर निकालें?

६. चौथे महीने में कौन-सा संस्कार निर्दिष्ट है?

७. विवाह का निश्चय हो जाने पर कन्या और वर का कौन-सा संस्कार एक ही समय में होवे?

८. बालक की जीभ पर क्या लिखा जाए?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ६/१६ का सही उत्तर

१. वर्ण	२. चाण्डाल
३. ब्राह्मण	४. दुःख
५. नीच	६. सत्पुरुष
७. सनातन	८. ब्राह्मण

"विस्तृत नियम पृष्ठ १५ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।"

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ सितम्बर २०१६

सत्यार्थ-पीयूष

वेदों में लोकतन्त्र

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने ऋग्वेद ३-३८-६

त्रीणि राजाना विदथे पुरूणि परि विश्वानि भूषथ: सदांसि।
अपश्यमत्र मनसा जगन्वान्व्रते गन्धर्वां अपि वायुकेशान्।।

आधार पर विद्यार्यसभा, धर्मार्यसभा और राज्यार्यसभा गठित करने का आदेश दिया है। अथर्व. १५-९-२ एवं १९-५५-५

तं सभा च समितिश्च सेना च .....।।
सभ्य: सभां मे पाहि ये च सभ्या: सभासद:।।

के आधार पर राज्य व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिए अन्य समितियों का वर्णन है। इन समस्त समितियों आदि के गठन करने का आदेश भी इसलिए दिया है ताकि राजा निरंकुश और स्वेच्छाचारी न बन सके।

महर्षि लिखते हैं....... 'किन्तु राजा जो सभापति, तदधीन सभा, सभाधीन राजा, राजा और सभा, प्रजा के अधीन और प्रजा राजसभा के अधीन रहे।' (सत्यार्थ प्रकाश ६ समुल्लास)

इस प्रकार इस अद्‌भुत व्यवस्था से राज्य में कोई वर्ग स्वेच्छाचारी न रह सकेगा, दूसरे राज्य की व्यवस्था को अलग-अलग विभागों में बाँटने से उसके संचालन में भी सुविधा और व्यावहारिकता का समावेश हो जाता था क्योंकि इससे प्रजा की सहभागिता भी और अधिक सुचारु रूप से सुनिश्चित हो जाती थी। इसीलिए महर्षि जी सत्यार्थप्रकाश के छठे समुल्लास में लिखते हैं- 'ईश्वर उपदेश करता है कि राजा और प्रजा के पुरुष मिल के सुख-प्राप्ति और विज्ञान वृद्धि कारक राजा-प्रजा के सम्बन्ध रूप व्यवहार में तीन सभा, अर्थात् विद्यार्य सभा, धर्मार्य सभा, राजार्य सभा नियत करके, बहुत प्रकार के समग्र प्रजा सम्बन्धी मनुष्यादि प्राणियों को सब ओर से विद्या, स्वातन्त्र्य, धर्म, सुशिक्षा और धनादि से अलंकृत करें। अर्थात् इन समितियों आदि के गठन से राज्य व्यवस्था इस प्रकार से चल सकेगी जिससे समस्त प्रजा का चहुँमुखी विकास हो सकेगा। इन सभाओं के नामों में आर्य शब्द यह सूचना देता है कि इन तीनों सभाओं के सदस्य आर्य अर्थात् श्रेष्ठ, परोपकारी और धार्मिक प्रकृति के विद्वान् होने चाहिए जो उन-उन समितियों के क्रियाकलापों के पूर्ण ज्ञाता हों। विद्यार्यसभा राज्य में विभिन्न विद्या-विज्ञानों की उन्नति, प्रचार और आविष्कार करके उनके विधिवत् कार्यान्वयन का कार्य देखेगी। राज्यार्य सभा समस्त प्रशासनिक एवं शासन व्यवस्था के नियमन का कार्य करेगी। सामवेद में संसद शब्द का उल्लेख आया है तथा अथर्ववेद के सातवें काण्ड का १२ वाँ सूक्त इस सम्बन्ध में उल्लेखनीय है। वहाँ पर सभा के दो सदनों का वर्णन है। एक सदन का नाम 'सभा' और दूसरे सदन का नाम 'समिति' है-

सभा च मा समितिश्चावतां प्रजापतेर्दुहितरौ संविदाने।
येना संगच्छा उप मा स शिक्षाच्चारु वदानि पितर: संगतेषु।।
विद्म ते सभे नाम नरिष्टा नाम वा असि।
ये ते के च सभासदस्ते मे सन्तु सवाचस:।।

यहाँ पर लोक सभा को प्रजा का रक्षक बताया है। ये सभा और समितियाँ प्रजा का पालन करने वाली राजा की दुहिताएँ हैं। सभा और समिति के सदस्यों को 'पितरः' का नाम दिया गया है। राज्य सभा के सदस्य क्योंकि राष्ट्र की रक्षा और पालना करते हैं इसलिए उनका पितर नाम बहुत ही सार्थकता लिए हुए है। सभासदों के पितर नाम से यह भी साफ होता है कि उनका राज्य व्यवस्था में अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान था। यहाँ पर सभा को 'नरिष्टा' अर्थात् किसी का नाश न करने वाली और स्वयं भी नष्ट न होने वाली कहा है। सभा नामक सदन में जो सदस्य चुने जाते थे, उनमें राष्ट्र की जनता का प्रतिनिधित्व ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये चारों वर्ण करते थे।

महर्षि ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में 'त्रीणि राजानि विदथे.. ..।' की सम्पूर्ण व्याख्या करते हुए लिखा है कि- 'तीन प्रकार की सभा ही को राजा मानना चाहिए, एक मनुष्य को कभी नहीं। वे तीनों ये हैं- प्रथम राज्य प्रबन्ध के लिए एक 'आर्यराजसभा', कि जिससे विशेष करके सब राज्यकार्य ही सिद्ध किए जावें दूसरी 'आर्यविद्यासभा', कि जिससे सब प्रकार की विद्याओं का प्रचार होता जाय, तीसरी 'आर्यधर्मसभा', कि जिससे धर्म का प्रचार और अधर्म की हानि होती रहे। इन तीन सभाओं से अर्थात् युद्ध में सब शत्रुओं को जीत के नाना प्रकार के सुखों से विश्व को परिपूर्ण करना चाहिए।'

सम्पादक- अशोक आर्य

समाचार

भानुमती श्यामजी कृष्ण वर्मा के बलिदान दिवस की तैयारी

माण्डवी (कच्छ) में २२ अगस्त २०१६ भानुमती श्यामजी कृष्ण वर्मा के बलिदान दिवस के अवसर पर भव्य 'आर्यमहिला महासम्मेलन' का आयोजन किया जा रहा है। गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा माण्डवी आर्य समाज एवं जन सहभागिता के साथ इस कार्यक्रम को भव्यता के साथ मनाने जा रही है। महर्षि दयानन्द सरस्वती के मानस-पुत्र, स्वतन्त्रता के प्रबल समर्थक, क्रान्तिवीर, इंग्लैण्ड में इण्डियन हाऊस के संस्थापक एवं हजारों युवकों के प्रेरणास्रोत पण्डित श्यामजी कृष्ण वर्मा की धर्म-पत्नी, देशभक्ता, भारतीय संस्कृति संस्कारों से ओतप्रोत स्वर्गीय भानुमती वर्मा के ८३ वें {गुजरात सरकार G. M. D. C. के सहयोग से होनेवाले} बलिदान दिवस में अनेक कार्यक्रम होंगे। जिसमें सर्वप्रथम यज्ञ (हवन) का कार्यक्रम रखा है, जिसके ब्रह्मा आर्यसमाज काँकरिया, अहमदाबाद के पुरोहित (धर्माचार्य) पं. श्री दिवाकर जी शास्त्री होंगे।

इन सभी कार्यक्रमों की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान व गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रमुख श्री सुरेशचन्द्र जी आर्य करेंगे। सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री, आर्यसमाज टंकारा के प्रमुख श्री हंसमुखभाई परमार करेंगे। इस क्रान्ति-तीर्थ स्थल माण्डवी के भव्य कार्यक्रम में भाग लेने के लिए अनेक गणमान्य जनों के भी आने की सूचना प्राप्त हो रही है ।

क्या भूत होते हैं ?

नवलखा महल उदयपुर में मासिक सत्संग में सत्यार्थ प्रकाश पर डिजिटल वर्कशाप के अन्तर्गत द्वितीय समुल्लास की शिक्षाओं को व्याख्यायित करते हुए न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष अशोक आर्य ने भूत-प्रेत आदि के वास्तविक अर्थों को प्रस्तुत करते हुए अनेक स्लाइडों के माध्यम से ऐसे अंधविश्वासों का प्रबल खण्डन करते हुए महर्षि दयानन्द के इस निर्देश के महत्त्व को उकेरित किया कि अंधविश्वासों की निस्सारता को बाल-मन में ही आरोपित कर देना चाहिए अन्यथा शंका और भय के भूत जिन्दगी भर उसका पीछा नहीं छोड़ते। कार्यक्रम का सफल संचालन करते हुए न्यास के कोषाध्यक्ष नारायण मित्तल ने कहा कि हम बचपन से सत्यार्थ प्रकाश की कथाएँ तथा तदाधारित उपदेश सुनते आये हैं पर डिजिटल माध्यम से जो प्रभावोत्पादकता तथा रोचकता उत्पन्न हुयी है वह प्रशंसनीय है तथा स्मृति पटल पर भी देर तक बने रहने के कारण सत्यार्थ शिक्षाएँ सदैव के लिए याद हो जायेंगी ऐसी आशा है।

इस अवसर पर उदयपुर स्मार्ट सिटी के एक्शन प्रमुख श्री दवे ने नवलखा महल को ऐतिहासिक स्थल बताते हुए आश्वासन दिया कि वे इसे पर्यटन स्थल के रूप में विभागीय वेबसाईट पर सम्मिलित कराने का पूर्ण प्रयास करेंगे।

व्यक्तित्व निर्माण प्रशिक्षण एवं संस्कार शिविर का आयोजन

आर्य समाज, महामन्दिर एवं आर्य वीर दल क्रान्तिकारी पण्डित रामप्रसाद बिस्मिल शाखा जोधपुर के संयुक्त तत्वावधान में २० मई से १२ जून २०१६ तक व्यक्तित्व निर्माण प्रशिक्षण एवं संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। सेवाराम जी आर्य द्वारा योग व प्राणायाम का प्रशिक्षण दिया गया।

समापन समारोह के मुख्य अतिथि श्रीमान् राजेन्द्र सिंह सोलंकी नेता प्रतिपक्ष नगर निगम, आचार्य सत्यानन्द जी वेदवागीश, विजय सिंह भाटी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, आर्य किशनलाल गहलोत, श्री हरिसिंह गहलोत, समाज सेवी श्री यशदत्त आर्य थे।

शिविर संचालक श्री गोपाल जी आर्य के नेतृत्व में श्रवणसिंह आर्य (जिम्नास्टिक), जगदीश प्रसाद आर्य (बॉक्सिंग), विक्रम आर्य, कुलदीप आर्य (कराटे) ने २०० आर्यवीर-वीरांगनाओं को प्रशिक्षण दिया गया। समाज सेवी हरिसिंह गहलोत द्वारा सभी बच्चों को टी-शर्ट व यज्ञदत्त आर्य द्वारा बच्चों को बाल सत्यार्थ प्रकाश पुस्तक प्रदान की गई। श्री राजेन्द्र सिंह सोलंकी ने उद्बोधन में कहा कि देश की आजादी में आर्य समाज ने हजारों क्रान्तिकारी आर्यवीर दिये उन्हीं के द्वारा देश आजाद हुआ। विजय सिंह भाटी प्रधान ने घोषणा की कि जो भी व्यक्ति ओ३म् का २.३० मिनट तक दो बार उच्चारण करेगा उसको ५१००० रुपये का पुरस्कार प्रदान किया जायेगा। आचार्य सत्यानन्द वेदवागीश द्वारा आशीर्वाद दिया गया।

– नरेन्द्र आर्य, मंत्री

आर्यसमाज हिरणमगरी द्वारा ऋग्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन

आर्य समाज हिरणमगरी द्वारा आगामी १६ अगस्त से २४ अगस्त तक ऋग्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है जिसके ब्रह्मा आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् डॉ. सोमदेव शास्त्री होंगे। वेद पाठ हेतु गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारियों को आमंत्रित किया गया है।

– भंवर लाल आर्य , प्रधान आर्य समाज

आर्यन महिला अभिनन्दन समारोह

आर्य समाज के क्षेत्र में जो महिलाएँ, संन्यासनी, उपदेशिका, भजनोपदेशिका के रूप में स्वतंत्र रूप से कार्य कर रहीं हैं अथवा जो कन्या गुरुकुलों में आचार्या हैं अथवा अध्यापन का कार्य कर रही हैं अथवा किसी भी रूप में आर्य समाज के कार्य को आगे बढ़ा रही हैं। हम उन सभी का अभिनन्दन करेंगे। सम्पूर्ण विवरण, कार्य क्षेत्र, आयु, शिक्षा आदि लिखकर भेंजे।

– पता –

ठाकुर विक्रम सिंह ट्रस्ट

ए-४१, लाजपत नगर-द्वितीय (निकट- मैट्रो स्टेशन)

नई दिल्ली- ११००२४

दूरभाष- ०११-४५७९११५२, २९८४२५२७

चलभाष- ०९५९९१०७२०७

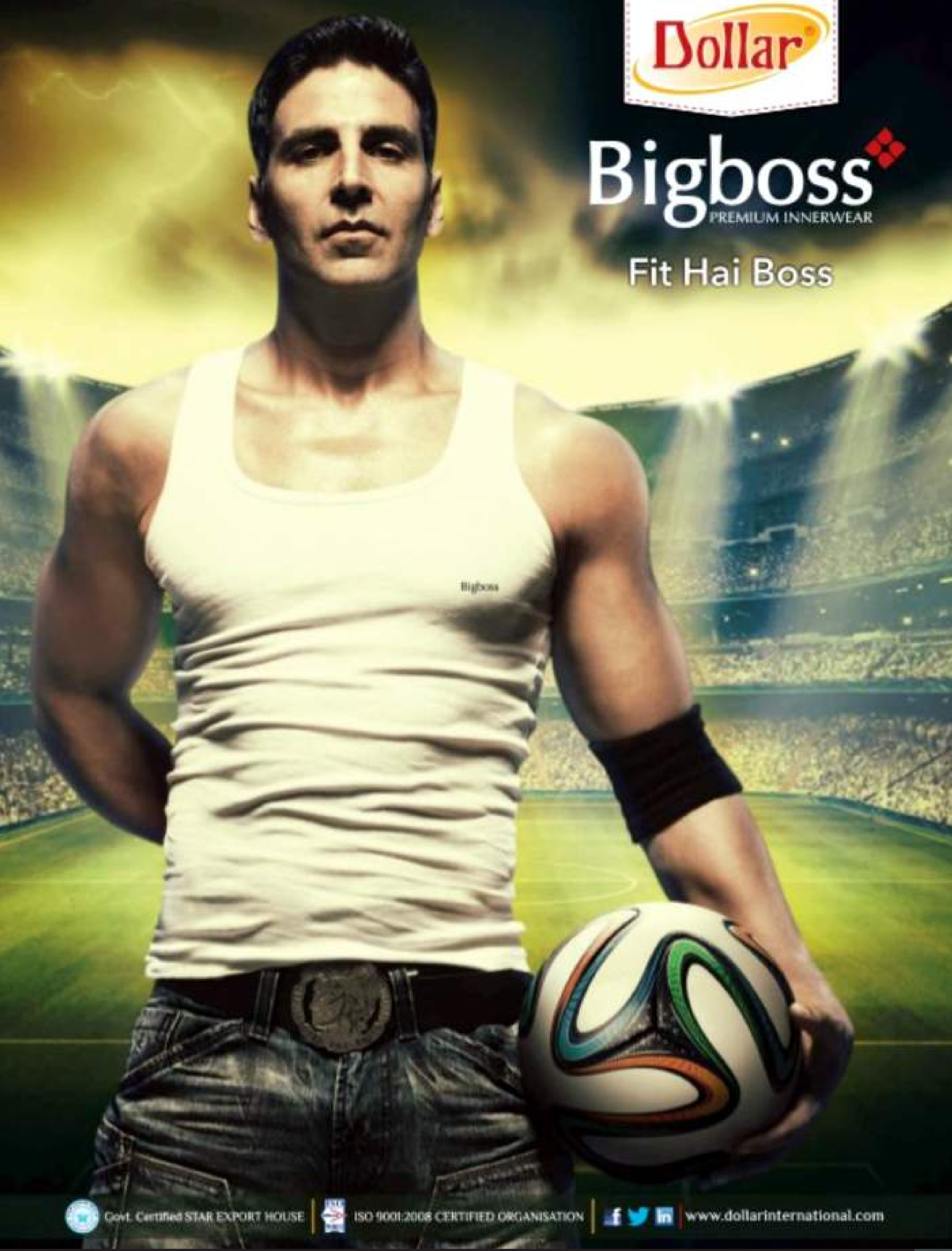
Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss
Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE
ISO 9001:2008 CERTIFIED ORGANISATION
www.dollarinternational.com

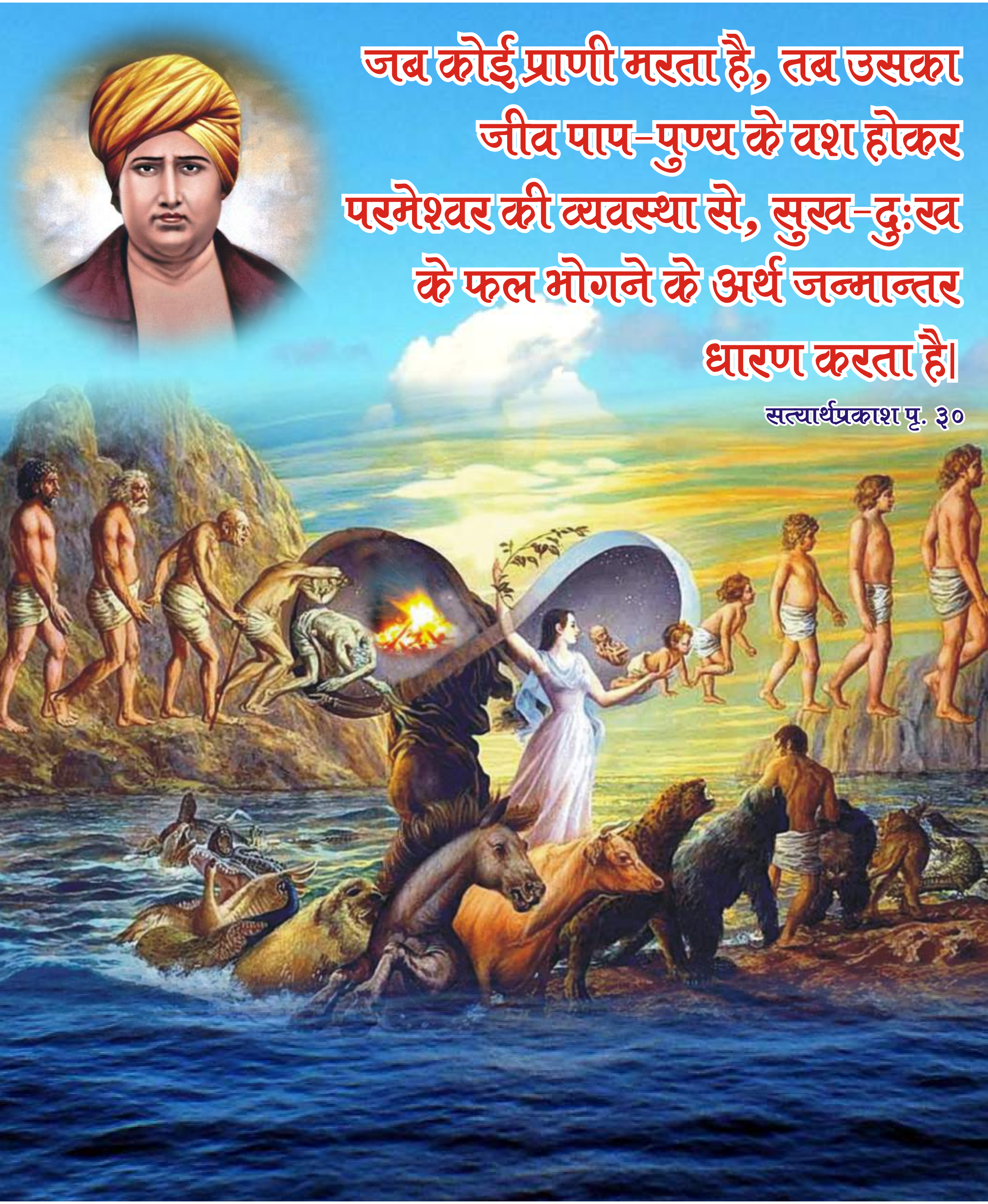

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर